भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 13 | जून-जुलाई-अगस्त 2012 | अंक 6-7-8

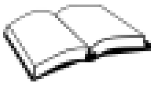

किताबें

बचपन में
जब नींद नहीं आती थी
माँ की गोद में
लेट जाता था।
माँ
मुझे लोरी सुनाती
मेरे बालों को सहलाती
और
मैं सो जाता था।
आज भी
जब मुझे
नींद नहीं आती
मैं
किताब पढ़ता हूँ
और
कुछ ही देर में
नींद के आगोश में
चला जाता हूँ,
सपनों में खो जाता हूँ।
शायद
किताबें ही
माँ का
प्रतिरूप हैं।

—ए० कीर्तिवर्द्धन

विस्थापन की चुनौतियाँ

मौसम-वैज्ञानिकों द्वारा घोषित 'अलनीनो-इफेक्ट' को दरकिनार करते हुए पछुआ हवाओं को धकेलती पुरवाई ने ऋतु-चक्र बदल दिया। आषाढ़ के पहले दिन के बजाय आखिरी दिन जो रिमझिम शुरू हुई उसने सावनी-सिलसिला थाम लिया है और सिंच रही है धरती, तृप्त हो रहे वृक्ष-विटप-वल्लरी, खिल रहे वन-उपवन, भींग रहा है तन-मन।

पिछले कुछ वर्षों में मौसम के इस बदलते तेवर को देखते हुए जी चाहता है कि 'आषाढस्य प्रथम दिवसे' की जगह 'प्रशम दिवसे' पढ़ा जाये। दो-हज़ार साल पहले रचित 'मेघदूत' की यह पंक्ति आज तक पढ़ी जा रही है जिसमें युगानुकूल बदलाव होना ही चाहिए और फिर महज़ एक शब्द के विस्थापन की ही तो बात है। भले ही महाकवि नाराज हों किन्तु समग्र-विकास की प्रक्रिया में इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मौसम के मिजाज़ को लेकर यह तो एक तात्कालिक प्रतिक्रिया है किन्तु विस्थापन का यह क्रम व्यापक हो चला है।

युद्ध-संघर्ष, ध्वंस-निर्माण, बाढ़-अग्निकाण्ड, महामारी जैसी आपदाओं में मानव-समुदायों का विस्थापन केवल अतीत की बात नहीं, वैश्वक-स्तर पर यह क्रम आज भी जारी है। किन्तु इसके समानान्तर आज हमारे देखते-देखते विस्थापित हो रही हैं हमारी परम्पराएँ, मर्यादाएँ, मान्यताएँ; जिन्हें पीछे धकेलते हुए विकास-पथ पर अग्रसर हैं हम। विकास का मूल्य चुकाते हुए अपनी सार्वभौम-राष्ट्रीयता के राष्ट्रगान की आड़ में अपने ही संसाधनों की बोली लगाकर वैश्वक-निवेश आमंत्रित कर रहे हैं। अर्थात् समझ-बूझकर आपसी समझौतों के अनुबन्ध-उपबन्ध के साथ नूतन आर्थिक-उपनिवेश की स्थापना कर रहे हैं। इस क्रम में जरा-सी भी चूक बहुत भारी पड़ती है। देसी-बाजार में मँहगाई आसमान छूने लगती है, अपेक्षित निवेश के अभाव में मुद्रा का अवमूल्यन होने लगता है जिसे रोकने की कोशिश में छीजने लगती है रिज़र्व-बैंक की जमा-पूँजी।

कथित विकास के नाम पर आत्म-विस्थापन का यह परिदृश्य हमारा वर्तमान है। अनपेक्षित स्थितियों से उबरने की जद्दोजेहद में आगत युवा-पीढ़ी को भी हम उसी औपनिवेशिक-तंत्र में ढाल रहे हैं जिसका माध्यम है शैक्षणिक-संस्कार। किशोर-युवाओं की रुचि, स्वाद, भाषा, भूषा बदलते हुए अन्त में उनकी सोच को भी बदल देने के लिए हमने विदेशी विश्वविद्यालयों के लिये पथ प्रशस्त करने की पुरजोर कोशिश की है। यद्यपि विपक्ष के विरोध के चलते यह कोशिश अधूरी रह गयी। किन्तु पिछले द्वार से तत्तत् विश्वविद्यालयों की शैक्षणिक-इकाइयों और उपाधियों को मान्यता देने की प्रक्रिया चल रही है। ज्यादा से ज्यादा निवेश हासिल करने के लिए की जा रही दूसरी कवायदों के बीच हमने अपने शिक्षा-तंत्र को भी दाँव पर लगा दिया है। स्कूल-कॉलेज-विश्वविद्यालयों के स्तर तक शैक्षणिक गुणवत्ता हासिल करने के लिए निजी तौर पर शिक्षा का व्यवसायीकरण किया जा चुका है। इसी क्रम में वैश्वक-विज्ञापनों की चकाचौंध से अभिभूत छात्र विदेशी शिक्षा-तंत्र को वरीयता देने लगेंगे और इसी प्रक्रिया

शेष पृष्ठ 2 पर

अध्येताओं, पुस्तकालयों, छात्रों, शिक्षा संस्थाओं हेतु

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

पृष्ठ 1 का शेष
में बदलती सोच के साथ युवा-चेतना का लक्ष्य भी निर्धारित करेगा यही—निवेश।

अभी कुछ दिन पहले तकनीकी-शिक्षा में प्रवेश हेतु देश के सभी आई०आई०टी० संस्थानों के लिए केन्द्रीय मानव-संसाधन मंत्रालय द्वारा निर्देश जारी किया गया था, जिसे सभी ने अस्वीकार कर दिया। यद्यपि यह एक अच्छी पहल है जो स्वीकार्य होनी चाहिए। हो सकता है कि इस प्रक्रिया में कुछ समय लगे किन्तु मन्त्रालय और अन्य संस्थानों को मिल-बैठकर मेडिकल-परीक्षा की तर्ज पर तकनीकी-शिक्षा में एकीकृत - प्रवेश-परीक्षा पद्धति को लागू कर देना चाहिए, इसी में छात्रों का हित है।

शिक्षा-क्षेत्र में गुणवत्ता के लिहाज से व्यावसायिक-संस्थानों में हमारी कुल आबादी का ज्यादा-से-ज्यादा 20 प्रतिशत ही प्रवेश करने की स्थिति में है। जबकि शेष 80 प्रतिशत सरकारी शिक्षा-संस्थानों में पढ़ाई कर रहे हैं। जनता के धन से संचालित/पोषित ये सरकारी शिक्षण-संस्थान, प्राइवेट (निजी) या विदेशी संस्थानों से प्रतिस्पर्धा में क्यों पिछड़े हुए हैं? इनके कारणों का पता लगाकर मंत्रालय को इस सम्बन्ध में कदम उठाने चाहिए ताकि जनता के पैसों की बरबादी न हो और सरकारी संस्थानों के किशोर-युवा भी प्रतिस्पर्धा में खरे साबित हों।

हमारी चिन्ता का दूसरा पहलू है शिक्षा-क्षेत्र से पुस्तकों को बेदखल करने की साजिश। 'इंटरनेट', 'गूगल' आदि के साथ विषयानुसार 'टेबलेट्स', 'ई-बुक्स' आदि का आगमन छात्रों को पुस्तकों से वंचित करने की तैयारी है। यांत्रिक-अतिवाद के चलते पुस्तकों का यह विस्थापन किशोर-मन को विकसित न होने देगा। उसे अपने विषय के अतिरिक्त दूसरे क्षितिज ही न दिखलायी देंगे। वह साहित्य, संस्कृति, दर्शन, कला आदि से अनभिज्ञ सीमित मन-मस्तिष्क का यंत्र-मानव बनकर रह जायेगा।

सामाजिक-आर्थिक विकास-प्रक्रिया में पद-पद पर सामूहिक या आत्मगत विस्थापन की चुनौतियों को रेखांकित करते हुए उनके सम्यक्-समाधान हेतु कार्ययोजना पहले ही बना लेनी आवश्यक है अन्यथा विकास के लाभ से 80 प्रतिशत जन-समुदाय वंचित ही रहेगा। इन्हीं संश्लिष्ट-चिन्ताओं के चिन्तन के बीच रास्ता तलाशता रहता है कवि-मन—

ये मूरत बोल सकती है अगर चाहो,
अगर कुछ शब्द, कुछ स्वर फेंक दो तुम भी।

सर्वेक्षण

● **साम्प्रदायिक/जातीय हिंसा :** कोकराझाड़ (असम) में पिछले दो-तीन हफ्ते से जारी साम्प्रदायिक/जातीय दंगे का अंतर्सत्य है सरकारों की वोट-राजनीति। बांग्लादेशी नागरिकों की बढ़ती संख्या के कारण असम के अनेक जिलों में सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक सन्तुलन बिगड़ चुका है। इसीलिए यह साम्प्रदायिक-विस्फोट हुआ। संकीर्ण राजनीति की वोट-ग्रस्त मानसिकता देश के साथ विश्वासघात है। स्थिति खराब होने पर प्रधानमंत्री का दौरा, सैनिकों का फ्लैग मार्च, राहत-पैकेज आदि से कुछ न होगा। जरूरत इस बात की है कि केन्द्र और राज्य की सरकारें दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय दें और तत्काल प्रभाव से बांग्लादेशी घुसपैठ को रोकें।

●● **रक्षत गङ्गाम् :** जलपुरुष स्वामी सानंद (प्रो० जी०डी० अग्रवाल) द्वारा आरम्भ किया गया अभियान अब तक जारी है। गंगा की अविरल निर्मलता के लिये लगातार तपस्या (अनशन) कर रहे हैं भगीरथ के वंशज, एकजुट है देश की सांस्कृतिक-आस्था, एकजुट हैं हिन्दू-मुसलमान। किसी भी मूल्य पर विकास की राजनीति से प्रेरित केन्द्र-सरकार के अधीन पर्यावरण और वन मंत्रालय ने भी अपना आकलन प्रस्तुत कर दिया है जिसके अनुसार प्रस्तावित 69 बाँधों में 81 फीसदी गंगा समाहित हो जायेगी। अब देखना है कि जन-आस्था, वैज्ञानिक-आकलन और अधीनस्थ मंत्रालयों की रिपोर्ट के बाद यह सरकार क्या निर्णय लेती है?

●●● **जोशे-ओलम्पिक :** वह राष्ट्रीय-गौरव का क्षण था जब भारतीय महानायक अमिताभ बच्चन लन्दन में आयोजित ओलम्पिक मशाल लेकर दौड़ रहे थे। वैश्वक-सद्भाव की यह ज्योति, हमें ही नहीं विश्व भर के मानव-मन को आलोकित करती है। पिछले एक दशक से विश्व-संस्कृति के इस आयोजन पर आतंकी-हमलों का खतरा बना हुआ है और संभावित खतरे से निपटने के लिए आयोजक देश सावधान भी हैं। इस बार लन्दन में भी काफी धर-पकड़ हुई है। ओलम्पिक में हिस्सा लेना, प्रतिस्पर्धा में जीतना जैसे जोश-भरे माहौल को कायम रखने के लिए जरूरी है कि हम युद्ध और आतंक से निजात पायें और विकास के साथ शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की स्थापना करें।

●●●● **असमाप्य सांस्कृतिक अनुष्ठान :** आदिकाल से ही लोक-संस्कृति की यज्ञ-ज्वाला प्रज्ज्वलित है। प्रत्येक युग में संस्कृतिकर्मी—साहित्य, संगीत, कला से संबद्ध वर्ग के लोग जन-चेतना को सुसंस्कृत, जागृत करते हुए अपनी आहुति देते रहे हैं। इसी कड़ी में अभिनेता आमिर खान और उनकी टीम ने टेलीविज़न के विभिन्न चैनल्स पर प्रसारित धारावाहिक 'सत्यमेव जयते' के 13 अध्याय पूरे किये। पत्रकारिता, साहित्य, संगीत और कला के समन्वय के साथ सामाजिक-विसंगतियों का वास्तविक-चित्रण करता यह धारावाहिक दर्शकों की संवेदना को झकझोरने में कामयाब रहा। विगत 6 मई को कन्या-भ्रूण-हत्या जैसे संवेदनशील विषय से आरम्भ यह धारावाहिक बाल-यौन-उत्पीड़न, मेडिकल-क्षेत्र की संवेदनहीन अनियमितताएँ, दहेज, सिर पर मैला ढोने का अभिशाप, खाप-पंचायतों के आदिम-निर्णय, अस्पृश्यता आदि विभिन्न ज्वलंत समस्याओं से साक्षात्कार करते हुए 29 जुलाई, रविवार को समानता के अधिकार विषय पर आकर पूर्ण हुआ। आमिर खान के अनुसार इस क्रम में यह पहला सत्र था, दूसरा सत्र भी आरम्भ किया जायेगा। वस्तुत: यह एक असमाप्य सांस्कृतिक-सत्र है जिसे जारी रहना चाहिए। इस दायित्वपूर्ण कार्य के लिए पूरी टीम के साथ आमिर खान को बधाई!

सत्यमेव जयति नानृतम्
सत्येन पन्था विततो देवयान: ॥

—परागकुमार मोदी

सनोक्रेसी बनाम पुत्रतन्त्र

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

महाराज मनु के ही समय में भारत विश्वगुरु बन गया था जब उन्होंने समूचे विश्व को सम्बोधित करते हुए कहा था—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

इसका भरपूर असर भी हुआ। गौतम बुद्ध के सन्देशों को लेकर पद्मसम्भव आदि आचार्य तथा महेन्द्र-संघमित्रा जैसे राजपुत्र-गण चीन एवं सिंहल तक पहुँच गये। कौण्डिन्य, श्रीमार तथा पूर्णकर्मा जैसे साहसी लोगों ने कम्बुज, चम्पा (वियतनाम) तथा सुवर्णद्वीप (जावा-बाली) में भारतीय उपनिवेशों की नींव डाली।

तब से भारत समूचे विश्व को 'कुछ न कुछ' दे ही रहा है। मेगस्थनीज, फाहियान, ह्वेनसांग, अल्बरूनी, इब्नेबतूता, मार्कोपोलो, मोंसरात तथा सर टॉमस रो जैसे विदेशी यात्री समय-समय पर भारत आते रहे तथा यहाँ की कीर्तिगाथा अपनी झोली में भर कर ले जाते रहे।

तो क्या भारत ने अब देना बन्द कर दिया है? क्या उसके पास अब विश्व को देने लायक कोई सामग्री बची ही नहीं? क्या भारत दानी से फकीर, अकिञ्चन, दरिद्र हो गया? हिश्श...यह क्या सोच रहे हैं आप? भारत के पास देवी द्रौपदी का दिया 'अक्षयपात्र' है जो? वह भला कभी रिक्त हो सकता है? जिस देश की संस्कृति में कल्पवृक्ष, कामधेनु और चिन्तामणि हों, भला वह कभी दरिद्र हो सकता है? मेरे भाई! भारत आज भी वदान्यता के शिखर पर है। उसने विश्व-राजनीति को एक ऐसी विलक्षण शासन-पद्धति दी है, जो अप्रतिम है, अद्वितीय है।

और वह विलक्षण शासन-पद्धति है—सनोक्रेसी (Sonocracy) अथवा पुत्रतन्त्र! यह तन्त्र पहले राजतन्त्र (Monarch) के रूप में सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त था, परन्तु लोकतन्त्र एवं साम्यवाद की आँधी में अचानक ढह गया 18वीं-19वीं शताब्दियों में। कुछेक देशों में अभी भी यह चल रहा है—पक्षाघात की स्थिति में! लकवा मार जाने के कारण यह वहाँ की संसद का रोंआ भी उखाड़ने की स्थिति में नहीं है। वक्ष, सिर पर मुकुट पहने जड़ाऊ खटिया पर पड़ा रहता है।

इस राजतन्त्र का लम्बा इतिहास है। समूचे विश्व में वह इतिहास प्रायः एक जैसा ही है। इस राज-परम्परा में कभी प्रजापालक पैदा होते थे तो कभी प्रजापीड़क। कभी भीषण रक्तपात से विचलित होकर, रणभूमि में ही शस्त्र त्याग कर 'बुद्धं शरणं गच्छामि' की घोषणा करने वाले पैदा हुए तो कभी अभागी दिल्ली में सात दिनों का क़त्ले-आम घोषित करने वाले आततायी। जनता की कुण्डली में नवग्रहों से ज्यादा प्रभावी यह दसवाँ ग्रह ही था—जिसको 'राजा' कहते थे।

जब राजा का स्थान प्रजा ने ले लिया तो सारी दुनिया को लगा कि अब सुख-शान्ति का राज्य होगा। क्योंकि अब वे राज करेंगे जो मूलतः प्रजा हैं, चुनाञ्चे प्रजा के दुःख-दर्दों के पूर्ण जानकार हैं। इसी गली से गुजरे हैं अतः गली की तकलीफों को जानते हैं। परन्तु यह क्या? ये तो राजधानी पहुँचते ही शेर बन गये? राजमद इन पर भी सवार हो गया। ये तो अपने को भी अशोक, विक्रम, हर्ष, भोज, समुद्रगुप्त का बाप समझने लगे। वे राजे-महाराजे तो—सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, अग्निवंशी न भी रहे हों तो कम से कम 'प्रख्यातवंशी' तो थे ही! परन्तु ये नये राजे तो हाथी के गोबर से उत्पन्न गुबरैलों की तरह विशुद्ध रूप से 'मलवंशी' हैं। इसी नये संशोधित, परिवर्तित, संस्कृत राजवंश का नया मुखौटा है—सनोक्रेसी अथवा पुत्रतन्त्र, जो भारत ने विश्व शासन-प्रणाली के क्षेत्र में 'लाञ्च' किया है। भारत में सनोक्रेसी की आशातीत सफलता से अब समूचे विश्व में इसका प्रचार होगा। जैसे डिमोक्रेसी (Democracy), ब्यूरोक्रेसी (Bureaucracy) ठीक वैसे ही सनोक्रेसी (Sonocracy) अथवा पुत्रतन्त्र। पुत्रतन्त्र का जन्मदाता बाप है लोकतन्त्र और इसकी जन्मदात्री माँ है अराजकता। इस प्रकार, यह 'हाइब्रिड' कोटि का जातक है जिसका आविष्कार आर्षप्रज्ञा के धनी भारतीय राजनेताओं ने किया है। पहले तो पुत्रतन्त्र के जनक या समर्थक राजनेता भारत में गिने-चुने ही थे, परन्तु अब तो प्रायः सभी राजनेता, राजनेत्रियाँ पुत्रतान्त्रिक मनोवृत्ति के हैं।

इस रोग से मात्र वही राजनेता, राजनेत्रियाँ मुक्त हैं जिनके पिछवाड़े पर (अंगविशेष) यथाकथञ्चित हरिद्रालेप नहीं हो पाया, फलतः जो क्वाँरे ही रह गये। भारत में यह शृंखला देवव्रत भीष्म के अवतार माननीय अटलजी से प्रारम्भ होती है। इन्हीं के वंशधरों में आते हैं—नरेन्द्र मोदीजी, मायाजी, जयललिताजी, नवीन पटनायकजी तथा ममता बनर्जी। साध्वी उमाभारतीजी भी इसी कुल-गोत्र की हैं।

पुत्रतन्त्र की नींव स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में ही पड़ गई थी, जब पं० मोतीलाल नेहरू के साथ उनके पुत्र जवाहरलालजी भी उस युद्ध में कूद पड़े थे। देश के स्वतन्त्र होने तक अनेक बेटे-बेटियाँ बाप का साथ देने लगे। पं० गोविन्दबल्लभ पन्त का स्थान कृष्णचन्द्र पन्त ने, रफी अहमद किदवई का स्थान मोहसिना किदवई ने तथा जवाहरलालजी का स्थान इन्दिराजी ने तथा बाबू जगजीवन का स्थान मीराकुमार ने ले लिया। परन्तु उस चरण में सन्तानों का राजनीति में प्रवेश एक संयोग मात्र था, कोई उत्तराधिकार नहीं।

परन्तु आज भारत का पुत्रतन्त्र पुराने राजतन्त्र की तरह (अ) धर्मशास्त्र-समर्थित एक बाध्यता बन गई है। अब तो हर राजनेता बाप अपने जीवनकाल में ही बेटे को गद्दीनशीन किये दे रहा है ताकि वह बेटे के विरोधी कल-पुर्जों को स्वयं ठीक कर दे। धुर दक्षिण से चलें तो भारत की यह सनोक्रेसी आपको करुणानिधि के घर से दिखने लगेगी जिनके बेटे-बेटी दोनों राजनीति में घुसे हैं। उड़ीसा में बीजू पटनायक के पुत्र नवीनजी मुख्यमन्त्री हैं। मध्यप्रदेश का सिन्धिया-परिवार 'जहाँ जाइयेगा हमें पाइयेगा' सरीखा गीतांश चरितार्थ कर रहा है। राजमाताजी भारतीय जनता पाटी की कद्दावर नेता थीं। पुत्र और पौत्र यानी माधवराव एवं ज्योतिरादित्य—दोनों कांग्रेस में हैं। पुत्री वसुन्धराजी बीजेपी से मुख्यमन्त्री रहीं। अब वसुन्धराजी के भी पुत्र सक्रिय हो उठे हैं। माधवराव की दूसरी बहन यशोधरा राजे भी सम्भवतः सांसद हैं। शासन चाहे कांग्रेस का हो, चाहे बीजेपी का—दोनों की जड़ें हैं तो एक ही आँगन में। राष्ट्रभक्त बेवकूफ बने बुआ-भतीजे की पृथक् भूमिका से, परिवार थोड़े न बनेगा? फलतः सिन्धिया परिवार हर हाल में प्रसन्न एवं सुखी है।

हरियाणा में चौधरी देवीलाल की तीसरी पीढ़ी काबिज है राजनीति में। ताऊ के बाद मुख्यमन्त्री बने उनके पुत्र ओमप्रकाश चौटालाजी और अगली बारी है उनके भी पुत्र अजय चौटाला की। पंजाब में तो हद हो गई बाप-बेटे की जुगलबन्दी की। बाप मुख्यमन्त्री और बेटा उप मुख्यमन्त्री। हिमाचल प्रदेश में मुख्यमन्त्री प्रेमकुमार धूमल के देखते ही देखते उनके पुत्ररत्न अनुराग ठाकुरजी दौड़ में पिता से भी आगे निकल गये हैं। वह सांसद होने के साथ ही साथ और भी कई पदों पर आसीन हैं। अपने यशस्वी पिता पं० सुखरामजी के कुकर्मों की कृपा से उनके पुत्र भी राजनीति में 'सान्त्वना पुरस्कार' की शैली में पुरस्कृत हो गये हैं। प्रदेश के बेटों की यह घुड़दौड़ देख राजा वीरभद्र सिंह का भी धैर्य अन्ततः छूट गया। सो उन्होंने भी राजकुमार विक्रमादित्य को 'जजमानी' में घुमाना आरम्भ कर दिया है।

परन्तु पुत्रतन्त्र को डंके की चोट पर प्रतिष्ठित किया मुलायम सिंहजी ने। मित्रों और स्वजनों की दबी जबान आलोचनाओं के बावजूद उन्होंने अखिलेश की ताजपोशी कर ही दी। अब अपनी ताजपोशी कब, कहाँ, कैसे, किस पद पर करायेंगे? यह आने वाला समय बतायेगा।

असल में विश्व के अन्यान्य देशों में

राजनेताओं की प्रतिष्ठा उनके गुणों के कारण होती है। वे कितने राष्ट्रभक्त हैं, कितने प्रखर वक्ता हैं, विश्व राजनीति का उन्हें कितना ज्ञान है, उनमें चारित्रिक वैशिष्ट्य क्या है? आदि इन्हीं गुणों के कारण जनता उन्हें राष्ट्र का कर्णधार बनाती है। परन्तु भारत में ठीक इसका उल्टा है। यहाँ के मानदण्ड कुछ और हैं। मसलन, बाप के उच्च पदासीन रहते आपने शराब में बुत होकर कितने दिहाड़ी मजदूरों को कुचला है? कितने थानेदारों को हड़काया है, गालियाँ दी हैं? कितने भले आदमियों का जीना हराम कर रखा है? ऐसे होनहार पुत्रों का भविष्य जानने के लिए किसी ज्योतिषी के पास जाने की जरूरत नहीं। क्योंकि उसका राजनीति में जाना, मन्त्री बनना ध्रुव है। परीक्षा देकर तो वह इस जन्म में किसी ऑफिस का क्लर्क भी नहीं बन सकता। न उसे कोई भाषा आती है, न उसे किसी विषय का ज्ञान होता है।

जैसे शिक्षा विभाग में 'मृत्यु कोटे' में नियुक्ति का नियम है वैसे ही भारत की राजनीति में भी। राजनीति में भी बाप के असमय मर जाने पर उसके बेटे या बेटी को समुचित अवसर दिया जाता है। ऐसे पिता, इस जीवन में मानव-रूप से तो पुत्र का भला नहीं कर पाते—परन्तु मरणोपरान्त भयावह शक्तिशाली प्रेत बनते ही वे पुत्र को प्रमोट करवा लेते हैं। ज्योतिरादित्य सिन्धिया, सचिन पायलट, जगन रेड्डी का भाग्योदय इसी पद्धति से हुआ है। बाप न मरा होता अकस्मात् तो इनका राजनीति में प्रवेश सन्दिग्ध ही था। होता भी तो प्रभूत विलम्ब से। आधी उमर गुजर जाती। कुछेक ऐसे भी अभागे कपूत हैं जो इस मृत्युकोटे का फायदा नहीं उठा पाये। उनमें एक है स्वर्गीय प्रमोद महाजन का पुत्र। वह राजनीति का दिव्य अवसर छोड़ स्वयंवर रचाने लगा।

इस सनोक्रेसी का सांगोपांग विवरण देने के लिए एक सांगोपांग (इक्झॉस्टिव) 'रक्तबीजसंहिता' लिखी जानी चाहिये क्योंकि अजीत सिंह, फारूख अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला, महबूबा, हरिकृष्ण-सुनील शास्त्री, विजय बहुगुणा, रीता बहुगुणा आदि जाने कितने नाम छूट रहे हैं। यदि पुत्र शब्द का अर्थविस्तार करके उसमें पत्नी, प्रेमिका, दामाद, भतीजा, भाई तथा शिष्य-शिष्या आदि को भी शामिल कर लिया जाय तो यह तालिका बेहद लम्बी और रोचक हो जायेगी। रोचक इसलिये हो जायेगी कि सिने-जगत में जिनकी उन्मादक प्रीतिकथायें कभी परवान चढ़ी थीं ऐसे लोग भी राजनीति में प्रतिष्ठित हुए। किसी शीर्षस्थ हस्ती को तो प्रेमिका के ही चक्कर में सत्ताच्युत तक होने की नौबत आ गई। कहीं पर तो दामाद ने ही ससुर जी को पटकनी देकर चित कर दिया। कहीं भतीजे ने ही बुढऊ चाचा की बोलती बन्द कर रखी है। कहीं अभागा बेटा, बाप की पद-प्रतिष्ठा पा ही नहीं सका।

परन्तु कुछेक पुत्रों ने कमाल भी किया। दिल्ली से चण्डीगढ़ की यात्रा बस से करें तो आपको सड़क के दायें-बायें ताऊ देवीलाल की भारी-भरकम पर्वताकार मूर्ति खड़ी मिलेगी। जीवन में तो ताऊजी बड़े सुख में जिये परन्तु अब मूर्ति बनते ही भयावह शीत, घाम और मूसलाधार बारिश झेल रहे हैं। ऐसी कई ताऊ-मूर्तियाँ आप करनाल से पंचकूला तक पायेंगे। पिता की यह मूर्ति स्थापना उनके वंशवद पुत्र, हरियाणा के पूर्व मुख्यमन्त्री चौटालाजी की विलक्षण पितृभक्ति का परिणाम है।

अब राष्ट्र की ओर से मेरा एक सवाल है पुत्ररत्न कि पिता की मूर्तिस्थापना का यह उन्माद कुर्सी जाते ही बन्द क्यों हो गया? एक मूर्ति ताऊजी की अपने पैसे से भी तो लगवा देते? यही सवाल तथाकथित बहन मायाजी से भी है कि तुम्हारा गजेन्द्रस्थापनाभियान कहाँ चला गया? जनता के पैसे का अपव्यय करने के लिए तो बड़ा कला प्रेम उमगा था?

वस्तुत: इस सन्दर्भ में जनहित याचिका आनी चाहिए सर्वोच्च न्यायालय में और न्यायालय को यह व्यवस्था देनी चाहिये कि कोई भी राजनेता अपने बाप-दादा के नाम पर इस प्रकार का अपव्यय न करे। यदि मूर्तियाँ स्थापित करनी हैं, स्कूल-कॉलेज बनवाना है तो अपने पैसे से करो?

एक विरोधी की टेप मात्र सुनने के कारण प्रेसीडेण्ट निक्सन को कुर्सी छोड़नी पड़ सकती है, बिल क्लिण्टन की, मॉफी माँगने के बावजूद फजीहत हो सकती है—परन्तु हाय रे देवभूमि भारत! तेरे आँगन में तो राक्षसों का नग्न नृत्य हो रहा है। तेरा क्या होगा (कालिया?) तूने तो किसी का नमक भी नहीं खाया है। उल्टे अपना ही नमक औरों को खिलाया है!!

भारत में मैं इस पुत्रतन्त्र का मंगलमय भविष्य देख रहा हूँ क्योंकि पुत्रतन्त्र के राजमार्ग पर गतिरोधक (स्पीडब्रेकर) नहीं है। कोई प्रोफेसर यदि बेटे को प्रोफेसर बनाना चाहे, इंजीनियर-डॉक्टर यदि बेटों को इंजीनियर-डॉक्टर बनाना चाहें तो नहीं बना सकते। क्योंकि उनमें भी बाप वाली योग्यता होनी चाहिए, जो परीक्षाओं को पास करने से ही प्राप्त होगी। बैक डोर इण्ट्री भी परीक्षा पास करने के बाद ही सम्भव है।

परन्तु एक राजनेता अपने बेटे को चुटकी बजाते राजनेता बना सकता है। क्योंकि उसके बेटे को अपने पिता की 'योग्यता' नहीं, उसकी 'अयोग्यता' चाहिये, जिसके लिए कोई परीक्षा नहीं पास करनी है। यह तो मात्र रक्तसम्बन्ध से पीढ़ी-दर-पीढ़ी उतरती रहती है। यदि बेटा बाप से भी बड़ा लफ्फाज, आदर्शहीन, झूठा, मक्कार, अवसरवादी, सब्जबागदर्शक तथा कृत्रिम लोकबन्धु है तो ध्रुव मानिये कि वह बाप से आगे ही जायेगा। जिन राजनेताओं के बेटे इस फन में माहिर नहीं निकले, वे दिहाड़ी मजदूर बन कर ही रह गये।

गीता में कहा गया है कि यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन: अर्थात् बड़े लोग जैसा आचरण करते हैं, समाज भी वैसा ही आचरण करता है। अब जबकि, सबके चाहने पर भी मुलायम सिंह ने स्वयं मुख्यमन्त्री न बन कर बेटे की ताजपोशी करा दी है तो ढेर सारे मुख्यमन्त्री बापों को मानो 'तारकमन्त्र' की दीक्षा दे दी है कि अपने रहते ही 'लल्लू' का राज्याभिषेक कर दो, वरना कोई पूछेगा नहीं। अन्त में संस्कृत का एक भरतवाक्य लिख कर यह सन्दर्भ समाप्त कर रहा हूँ—

राजतन्त्रं मृतं लोकतन्त्रं विफलतां गतम्।
साम्प्रतं भारते त्वस्मिन् पुत्रतन्त्रं महीयते॥

पाठकों के पत्र

भारतीय वाङ्मय का मार्च-अप्रैल (संयुक्तांक) मुझे यथासमय मिल गया था 'मधु वाता: ऋतायते..' से गुजरना एक रुचिकर अनुभव रहा।

दिवसीय आडम्बरों और थोथे अनुष्ठानों को दरकिनार करती वह 'बसन्ती बयार' अब सूर्यताप से दग्ध हो चुकी है, समय के राजपथ पर चलते हुए उसकी सलज्ज माधवता अब तक तिरोहित हो गयी है। ऐसे में विलम्बित प्रतिक्रिया देना एक तरह से बसन्त के पुनर्निवेशन जैसा ही है।

अन्य नियमित स्तम्भों के अतिरिक्त विश्व पुस्तक मेले से सम्बन्धित सूचनाएँ काफी उपयोगी हैं, राजनीति के समुद्र को मथती अभिराज राजेन्द्र मिश्रजी की व्यंग्य-रचना अच्छी लगी।

मैंने प्रतिष्ठान की वेबसाइट पर मई वाले अंक का अवलोकन तो किया लेकिन, पन्ने पलट सकने का सुख तो अलग ही होता है न! अस्तु, इस पर फिर कभी...

...तब तक बसन्ती बयार सावन के पूर्वराग में गंगातीरे झूम रही होगी, बिल्कुल जायसी की कहन को चरितार्थ करते हुए—

मिलहिं जे बिछुरे साजन अंकम भेंट अहन्त।
तपनि मृगसिरा जे सहे सो अद्रा पलुहंत॥

—**आशुतोष माधव**, वाराणसी

मई अंक देखा-पढ़ा। इस अंक में मूर्धन्य कवि अशोक वाजपेयी की तरफ से पुस्तक-प्रसार और एक कारगर पुस्तक संस्कृति के रचनार्थ कतिपय बहुत अच्छे सुझाव आये हैं जिनकी प्रशंसा और तरफदारी जरूरी समझता हूँ।

इस अंक में वरिष्ठ समालोचक वीरेन्द्र यादव का लेख 'समाजवादी बदलाव और साहित्य' पढ़कर आशा करता हूँ कि उ०प्र० की समाजवादी सरकार साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थानों को नवजीवन और स्वतन्त्रता देगी।

—**केशव शरण,** वाराणसी

वेबसाइट : www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

हिन्दीसमयडॉटकॉम : हिन्दी का सबसे बड़ा ऑनलाइन पुस्तकालय

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय से एक अपेक्षा यह की जाती है कि वह हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराए। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब हिन्दी न सिर्फ गम्भीर विमर्श का माध्यम बने, बल्कि हिन्दी में लिखा गया महत्वपूर्ण साहित्य देश-विदेश के विशाल पाठक समुदाय तक पहुँचे। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित हिन्दीसमयडॉटकॉम इसी दिशा में एक महत्वाकांक्षी प्रयास है।

इस वेबसाइट ने अल्प समय में ही अच्छी-खासी लोकप्रियता अर्जित कर ली है। अभी तक लगभग साढ़े चार लाख पाठक इस वेबसाइट पर आ चुके हैं। करीब दो हजार पाठक रोज हिन्दीसमयडॉटकॉम का पन्ना खोलते हैं। इनमें संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, नॉर्वे, डेनमार्क, पाकिस्तान, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कनाडा, आस्ट्रेलिया, ईरान, पुर्तगाल, स्पेन आदि देशों के पाठक होते हैं।

हिन्दीसमयडॉटकॉम पर इस समय एक लाख से ज्यादा पृष्ठों पर हिन्दी की बहुत-सी मूल्यवान रचनाएँ सँजोई जा चुकी हैं तथा रोज कुछ नया जोड़ा जाता है।

हिन्दीसमयडॉटकॉम पर उपलब्ध सामग्री को चौदह मुख्य खण्डों में बाँटा गया है—उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, भक्तिकाल का साहित्य, विभाजन की कहानियाँ, लेखकों के समग्र और संचयन, ई-पुस्तकें, अनुवाद तथा विविध, जिसमें वैचारिक निबन्ध, संस्मरण, व्यंग्य, यात्रा-वृत्तान्त आदि शामिल हैं। एक प्रमुख खण्ड 'हिन्दुस्तानी की परम्परा' का है, जिसमें उन कृतियों तथा रचनाओं को शामिल किया गया है, जो हिन्दी-उर्दू की साझा परम्परा का जीवन्त दस्तावेज है। एक खण्ड अभिलेखागार का भी है, जिसमें हिन्दी के रचनाकारों की तस्वीरें, उनकी हस्तलिपि में लिखित रचनाओं, ऑडियो, वीडियो, पत्रों आदि का संकलन है। लेखक दीर्घा में हिन्दी के सभी समकालीन रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय, फोटोग्राफ, पता, फोन नम्बर आदि उपलब्ध कराने का प्रयास जारी है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की विभिन्न योजनाएँ

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की हिन्दीतरभाषी प्रान्तों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम-योजनाएँ हैं। हिन्दीतरभाषी हिन्दी-प्रेमियों, विद्वानों, लेखकों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और अनुवादकों को सहयोजित करने वाली ये योजनाएँ अखिल भारतीय स्तर पर विविध भाषा-भाषियों को एक-दूसरे के निकट लाती हैं। हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप की व्यावहारिक जानकारी देने वाले इन विस्तार कार्यक्रमों के अन्तर्गत विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों में जो भाग लेना चाहें, वे निर्धारित प्रपत्र के अनुसार आमन्त्रित हैं—हिन्दीतरभाषी हिन्दी नवलेखक शिविर, हिन्दीतरभाषी हिन्दी विद्यार्थियों की अध्ययन-यात्राएँ, हिन्दीतरभाषी क्षेत्रों के हिन्दी शोध-छात्रों को यात्रा-अनुदान, प्राध्यापक व्याख्यानमाला तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी। अधिक जानकारी के लिए निदेशालय की वेबसाइट www.hindinideshalaya.nic.in देखें।

दुनिया का सबसे बड़ा लिफाफा

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का नाम दुनिया का सबसे बड़ा लिफाफा बनाने के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। यहाँ के छात्रों ने 20 अप्रैल को यह लिफाफा बनाना शुरू किया। बीटेक तृतीय वर्ष के छात्र सैयद नबी मेहदी के नेतृत्व में डेढ़ दर्जन से अधिक छात्रों ने 10 दिन में यह लिफाफा बनाकर तैयार किया। यह लिफाफा 36 फुट 1 इंच लम्बा तथा 24 फुट 11 इंच चौड़ा है। इससे पहले यह रिकार्ड लन्दन की पैकेजिंग कम्पनी स्टेनले गिबसन के नाम था।

अब फेसबुक आपका व्यक्तित्व बतायेगा

अब फेसबुक का पन्ना यह बता सकता है कि आप किस तरह के इंसान हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ मिसौरी के शोधकर्ताओं ने एक ऐसा पैमाना बनाया है जिससे किसी के व्यक्तित्व का आकलन किया जा सकेगा। शोधकर्ताओं का कहना है कि जो लोग जल्दी-जल्दी अपना फेसबुक स्टेटस और फोटो बदलते हैं और अपने दोस्तों के सम्पर्क में रहते हैं वे जोखिम उठाने वाले होते हैं। वहीं दूसरी ओर जो कभी-कभी अपना फेसबुक स्टेटस या फोटो बदलते हैं वे लोगों से घुलना मिलना कम पसन्द करते हैं।

हिन्दी प्रकाशन जगत के शलाका पुरुष श्री विश्वनाथजी को हिन्दीरत्न सम्मान

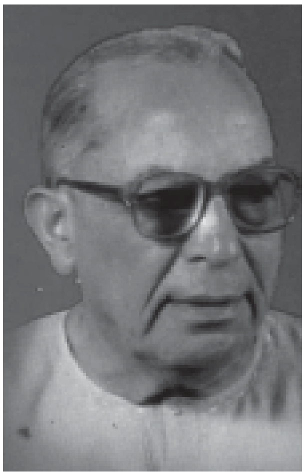

हिन्दी प्रकाशन के क्षेत्र में विश्वस्तरीय मानदण्ड स्थापित करने का श्रेय यदि किसी को जाता है तो वे हैं राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल पक्षधर, राजपाल एण्ड सन्ज़ के मुखिया एवं वरिष्ठ लेखक **श्री विश्वनाथजी**। हिन्दी साहित्य जगत के विलक्षण साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं से सम्पूर्ण भारतीय जनमानस को परिचित कराने का श्रेय यदि किसी को जाता है, तो वे हैं **श्री विश्वनाथजी**। कम से कम मूल्य में हिन्दी साहित्य की बेहतरीन पुस्तकों को घर-घर पहुँचाने की नयी क्रान्ति का सूत्रपात यदि किसी ने किया तो वे हैं **श्री विश्वनाथजी**। और न जाने कितने ही योगदान हैं श्री विश्वनाथजी के हिन्दी साहित्य जगत, शिक्षा जगत और हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन की दुनिया में। देश में हिन्दी प्रकाशनों के प्रेरणास्रोत हैं विश्वनाथजी।

आज सम्पूर्ण हिन्दी प्रकाशन एवं हिन्दी साहित्य जगतश्री विश्वनाथजी के हिन्दीरत्न सम्मान के अलंकरण से स्वयं को गौरवान्वित एवं अलंकृत महसूस कर रहा है।

नयी दिल्ली के हिन्दी भवन सभागार में विगत 1 अगस्त 2012 को राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जयन्ती के शुभ अवसर पर पं० भीमसेन विद्यालंकार की स्मृति में आयोजित हिन्दीरत्न सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि महामहिम श्री बनवारीलाल जोशी, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, प्रख्यात साहित्यकार व पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री बिशननारायण टण्डन की अध्यक्षता, कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल एवं हिन्दी भवन के अध्यक्ष श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदीजी व विशिष्ट अतिथि भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक श्री रवीन्द्र कालिया के सान्निध्य में श्री विश्वनाथजी को वर्ष 2012 के हिन्दीरत्न सम्मान से अलंकृत किया गया।

27 जुलाई 1920 को जन्मे श्री विश्वनाथजी अनवरत रूप से आज तक हिन्दी प्रकाशन एवं साहित्य जगत के उत्थान एवं परिष्कार में संलग्न हैं। आपके पिताजी महाशय राजपालजी ने हिन्दी प्रकाशन जगत में क्रान्ति की जो मशाल प्रज्ज्वलित की थी उसकी लौ को और प्रखर करते हुए आप उसे लेकर आगे बढ़ते रहे और आज भी यह सफर अनवरत जारी है।

समस्त हिन्दी प्रकाशन जगत एवं साहित्य जगत को इस श्रेष्ठ सम्मान से सम्मानित करने हेतु आदरणीय विश्वनाथजी को भारतीय वाङ्मय परिवार की ओर से कोटिश: आभार एवं हार्दिक बधाई। हम जानते हैं कि भारतीय वाङ्मय के संस्थापक स्व० श्री पुरुषोत्तमदास मोदी, जिनसे आपकी अत्यन्त ही आत्मीयता थी, की आत्मा भी आपके इस सम्मान से अत्यन्त गद्‌गद् एवं अभिभूत होगी। **—सम्पादक**

प्रेमचंदजी की 132वीं जयन्ती के अवसर पर प्रेमचंदजी के जीवन का सार स्वयं प्रेमचंद की जुबानी

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के सम्पादन में 'हंस' का प्रकाशन मार्च, 1930 में वसंत पंचमी के दिन प्रारम्भ हुआ था। देशप्रेम, साहित्यिक अभिरुचि एवं साहित्य सेवा की अदम्य लालसा ने उन्हें काशी से एक साहित्यिक पत्रिका निकालने के लिए प्रेरित किया।

1932 ई० में प्रकाशित 'हंस' का विशेषांक 'आत्मकथा अंक' दशकों से अप्राप्य था। आज हम यत्र-तत्र आत्मकथा और संस्मरणों का जो दौर देखते हैं उसका जनक था 'हंस' का यह 'आत्मकथा अंक'। उसी अंक में प्रेमचंदजी ने अपना आत्मकथ्य, अपना जीवन-सार प्रस्तुत किया था। तो प्रस्तुत है 'हंस' के 'आत्मकथा अंक' में प्रकाशित प्रेमचंदजी के उसी जीवन सार, आत्मकथ्य का कुछ अंश...

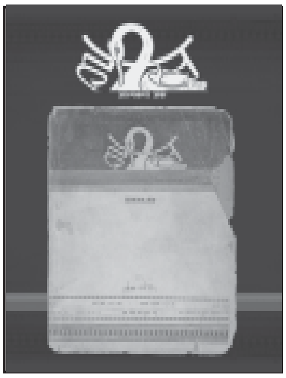

क्राउन अठपेजी | *पृष्ठ* 208

अजिल्द : 978-81-7124-631-1 • रु० 200.00

जीवन-सार

लेखक : **श्रीयुत बाबू प्रेमचन्दजी,** बी०ए०

मेरा जीवन सपाट, समथल मैदान है, जिसमें कहीं-कहीं गढ़े तो हैं; पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खड्डों का स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाड़ों की सैर के शौकीन हैं, उन्हें तो यहाँ निराशा ही होगी। मेरा जन्म सम्वत् 1937 में हुआ। पिता डाकख़ाने में क्लर्क थे, माता मरीज़, एक बड़ी बहन भी थीं। उस समय पिताजी शायद 20) पाते थे। 40) तक पहुँचते-पहुँचते उनकी मृत्यु हो गई। यों वह बड़े विचारशील, जीवन-पथ पर आँखें खोलकर चलनेवाले आदमी थे; लेकिन आखिरी दिनों में एक ठोकर खा ही गये और खुद तो गिरे ही थे, उसी धक्के में मुझे भी गिरा दिया। पन्द्रह साल की अवस्था में उन्होंने मेरा विवाह कर दिया और विवाह करने के साल ही भर बाद परलोक सिधारे। उस समय मैं नवें दरजे में पढ़ता था। घर में मेरी स्त्री थी, विमाता थीं, उनके दो बालक थे, और आमदनी एक पैसे की नहीं। घर में जो कुछ लेई-पूँजी थी, वह पिताजी की छ: महीने की बीमारी और क्रिया-कर्म में खर्च हो चुकी थी। और मुझे अरमान था, वकील बनने का और एम०ए० पास करने का। नौकरी उस जमाने में भी इतनी ही दुष्प्राप्य थी, जितनी अब है। दौड़-धूप करके शायद दस-बारह की कोई जगह पा जाता; पर यहाँ तो आगे पढ़ने की धुन थी—पाँव में लोहे की नहीं, अष्टधातु की बेड़ियाँ थीं और मैं चढ़ना चाहता था—पहाड़ पर!

पाँव में जूते न थे, देह पर साबित कपड़े न थे। मँहगी अलग—10 सेर के जव थे। स्कूल से साढ़े तीन बजे छुट्टी मिलती थी। काशी के क्विंस कॉलेज में पढ़ता था। हेडमास्टर ने फ़ीस माफ़ कर दी थी। इम्तहान सिर पर था। और मैं बाँस के फाटक एक लड़के को पढ़ाने जाता था। जाड़ों के दिन थे। चार बजे पहुँचता था। पढ़ाकर छ: बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था। तेज़ चलने पर भी आठ बजे से पहले घर न पहुँच सकता। और प्रात: काल आठ ही बजे फिर घर से चलना पड़ता था, नहीं वक्त पर स्कूल न पहुँचता। रात को भोजन करके कुप्पी के सामने पढ़ने बैठता और न जाने कब सो जाता। फिर भी हिम्मत बाँधे हुए था।

मैट्रिकुलेशन तो किसी तरह पास हो गया; पर आया सेकेंड डिवीज़न में और क्विंस कॉलेज में भरती होने की आशा न रही। फ़ीस केवल अव्वल दरजे वालों ही की मुआफ़ हो सकती थी। संयोग से उसी साल हिन्दू कॉलेज खुल गया था। मैंने इस नये कालिज में पढ़ने का निश्चय किया। प्रिंसिपल थे—मि० रिचर्डसन। उनके मकान पर गया। वह पूरे हिन्दुस्तानी वेष में थे। कुरता और धोती पहने फ़र्श पर बैठे कुछ लिख रहे थे। मगर मिजाज़ को तबदील करना इतना आसान न था। मेरी प्रार्थना सुनकर—आधी ही कहने पाया था—बोले कि घर पर मैं कॉलेज की बात-चीत नहीं करता, कॉलेज में आओ। खैर, कॉलेज में गया। मुलाक़ात तो हुई; पर निराशाजनक। फ़ीस मुआफ़ न हो सकती थी। अब क्या करूँ। अगर प्रतिष्ठित सिफ़ारिशें ला सकता, तो शायद मेरी प्रार्थना पर कुछ विचार होता; लेकिन देहाती युवक को शहर में जानता ही कौन था।

रोज़ घर से चलता कि कहीं से सिफ़ारिश लाऊँ, पर 12 मील की मंजिल मारकर शाम को घर लौट आता। किससे कहूँ! कोई अपना पुछत्तर न था।

कई दिनों के बाद एक सिफ़ारिश मिली। एक ठाकुर इंद्रनारायणसिंह हिन्दू कॉलेज की प्रबंधकारिणी सभा में थे। उनसे जाकर रोया। उन्हें मुझ पर दया आ गई। सिफारिशी चिट्ठी दे दी। उस समय मेरे आनन्द की सीमा न थी। खुश होता हुआ घर आया। दूसरे दिन प्रिंसिपल से मिलने का इरादा था; लेकिन घर पहुँचते ही मुझे ज्वर आ गया। और दो सप्ताह से पहले न हिला। नीम का काढ़ा पीते-पीते नाक में दम आ गया। एक दिन द्वार पर बैठा था कि मेरे पुरोहितजी आ गये। मेरी दशा देखकर समाचार पूछा और तुरन्त खेतों में जाकर एक जड़ खोद लाये और उसे धोकर सात दाने काली मिर्च के साथ पिसवाकर मुझे पिला दिया। उसने जादू का असर किया। ज्वर चढ़ने में घण्टे ही भरकी देर थी। इस औषधि ने, मानो, जाकर उसका गला ही दबा दिया। मैंने पण्डितजी से बार-बार उस जड़ी का नाम पूछा; पर उन्होंने न बताया। कहा—नाम बता देने से उसका असर जाता रहेगा।

एक महीने के बाद मैं फिर मि० रिचर्डसन से मिला और सिफ़ारिशी चिट्ठी दिखाई। प्रिंसिपल ने मेरी तरफ़ तीव्र नेत्रों से देखकर पूछा—इतने दिनों कहाँ थे?

'बीमार हो गया था?'

'क्या बीमारी थी?'

मैं इस प्रश्न के लिए तैयार न था। अगर जवर बताता हूँ, तो शायद साहब मुझे झूठा समझें। ज्वर मेरी समझ में हलकी-सी चीज़ थी। जिसके लिये इतनी लम्बी गैर हाजिरी अनावश्यक थी। कोई ऐसी बीमारी बतानी चाहिए, जो अपनी कष्टसाध्यता के कारण दया को भी उभारे। उस वक्त मुझे और किसी बीमारी का नाम याद न आया। ठाकुर इन्द्रनारायणसिंह से जब मैं सिफ़ारिश के लिये मिला था, तो उन्होंने अपने दिल की धड़कन की बीमारी की चरचा की थी। वह शब्द मुझे याद आ गया।

मैंने कहा—पैलपिटेशन आफ़ हार्ट सर।

साहब ने विस्मित होकर मेरी ओर देखा और कहा—अब तुम बिलकुल अच्छे हो?

'जी हाँ?'

'अच्छा प्रवेश-पत्र भर कर लाओ।'

मैंने समझा बेड़ा पार हुआ। फार्म लिया, खानेपुरी की और पेश कर दिया। साहब उस समय कोई क्लास ले रहे थे। तीन बजे मुझे फ़ार्म वापस मिला। उस पर लिखा था, इसकी योग्यता की जाँच की जाय।

यह नई समस्या उपस्थित हुई। मेरा दिल बैठ गया। अंग्रेजी के सिवा और किसी विषय में पास होने की मुझे आशा न थी, और बीजगणित और रेखागणित से तो मेरी रूह काँपती थी। जो कुछ याद था, वह भी भूल-भाल गया था, लेकिन दूसरा उपाय ही क्या था। भाग्य का भरोसा करके क्लास में गया और अपना फार्म दिखाया। .....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

वेबसाइट : www.vvpbooks.com

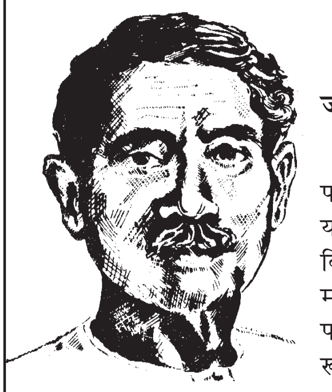

लमही में लगा यादों का मेला

जयन्ती पर प्रेमचंद के पैतृक गाँव में हुए विविध आयोजन

वाराणसी। विगत 31 जुलाई को 132वीं जयन्ती के अवसर पर कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के पैतृक गाँव लमही में उनकी यादों का मेला लगा। किसी ने वैचारिक भूमि पर उनका स्मरण किया तो किसी ने रंगभूमि के माध्यम से उनके कथा साहित्य का मर्म जनसामान्य तक पहुँचाया। प्रेमचंद प्रतिमा स्थल के सीमित परिसर में असीमित विस्तार वाली उनकी कहानियों का नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया गया तो प्रेमचंद के गाँव लमही के रामलीला मैदान पर विशाल जनसमुदाय उमड़ पड़ा।

प्रतिमा स्थल पर उपस्थित विद्वानों के विचार सुनने के बाद दर्शकों ने मुंशीजी की कहानियों पर आधारित नाटकों के माध्यम से प्रेमचंद से परिचय बढ़ाया। जिसमें ईदगाह भी सजा। वहाँ हामिद का चिमटा बजा तो बच्चों के मुक्त हास में अमीना दादी के प्रति सम्मान भी दिखा। बड़े भाई साहब की रोचक सनक लोगों के बीच प्रेमचंद को जिन्दा कर गई तो कई चेहरों पर चर्चित कहानी नैराश्य की नायिका निरूपमा नुमाया होती दिखी। महोत्सव के बीच हमेशा की तरह विडम्बना की छाया भी लगी रही मिठाइयों-पूडियों की गन्ध और करतल ध्वनि से बूढ़ी काकी हमेशा की तरह दूर बैठी दिखीं।

महोत्सव का आकर्षण बिरहा गायक हीरालाल यादव का गायन भी रहा। वयोवृद्ध हीरा लाल ने चैती, कजरी और कई भक्ति गीत सुनाए।

प्रेमचंद स्मारक न्यास एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से मण्डलायुक्त चंचल कुमार तिवारी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित गोष्ठी में 16 विशिष्टजनों—पं० श्रीकृष्ण तिवारी, डॉ० चौथीराम यादव, बिरहा गायक हीरालाल यादव, डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र, प्रो० श्रद्धानंद, प्रो० सुरेन्द्र प्रताप, डॉ० मुक्ता, डॉ० अजय मिश्रा, डॉ० सुधाकर अदीब, वीरेन्द्र सारंग, डॉ० दयानंद पाण्डेय, डॉ० अनिता दुबे, डॉ० अत्रि भारद्वाज, हिमांशु उपाध्याय, डॉ० बेनी माधव एवं डॉ० रामसुधार को सम्मानित भी किया गया।

हम सब के बीच जिन्दा हैं कथा सम्राट

प्रेमचंद से जुड़ी सभी योजनाओं पर तेजी से कार्य किया जाएगा। जहाँ तक उनके पात्रों का प्रश्न है तो बदले हुए हालात में वह अब भी हम सब के बीच जिन्दा हैं। जरूरत है उनके हालात में सुधार करने की।

—चंचल कुमार तिवारी, मंडलायुक्त

प्रेमचंद की चरचा आते ही गोदान के किरदार जेहन में घूम जाते हैं। उनके बाद अगला कौन होगा जिसकी लेखनी उतनी सशक्त होगी। यह चुनौती लम्बे समय से बनी हुई है। साहित्यकार इस दिशा में अवश्य सोचें।

—डॉ० चौथीराम यादव

हिन्दी साहित्य जगत में सहजता और सादगी की बात जब भी आएगी मुंशीजी का नाम बहुत ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाएगा। आवश्यकता है उनके विचारों को आत्मसात करने की।

—डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र, समालोचक

आम आदमी की पीड़ा को निकट से महसूस करने की अद्वितीय क्षमता मुंशीजी में थी। न तो उनसे पहले किसी ने ऐसा साहित्य सृजन किया और न ही उनके बाद कोई ऐसा साहस जुटा सका। **—श्रीकृष्ण तिवारी**, नवगीतकार

पाठकों के हृदय में गहराई तक उतरते हैं मुंशी जी

वाराणसी। प्रसिद्ध कथाकार डॉ० काशीनाथ सिंह ने कहा कि कहानी समकालीन समाज और जिन्दगी की तस्वीर होती है। रचनाकार अनुभूति के स्तर पर जिस जीवन को भोगता है, कहानी में वह उसी का चित्रण करता है। प्रेमचंद का कथा साहित्य इस मामले में उत्कृष्ट है और इसीलिए मुंशीजी पाठकों के हृदय की गहराई तक उतर जाते हैं। उन्होंने स्थानीय पराड़कर भवन में कथा सम्राट प्रेमचंद स्मृति समारोह में बतौर मुख्य अतिथि ये बातें कहीं। समारोह का आयोजन उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ और साहित्य संघ, वाराणसी की ओर से किया गया।

साहित्यकार अरुण प्रकाश का निधन

18 जून को हिन्दी के सुपरिचित कथाकार एवं कवि अरुण प्रकाश का निधन हो गया। उन्होंने सभी विधाओं में अपनी कलम चलाई। 'भइया एक्सप्रेस', 'मझधार किनारे', 'जल प्रांतर', 'लाखों के बोल सहे' कहानी-संग्रह, 'रथ के बारे में' कविता-संग्रह, 'कोंपल कथा' उपन्यास आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली, राष्ट्रभाषा परिषद, बिहार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया।

स्मृति शेष

बावला का अवसान

विगत 9 मई को भोजपुरी अंचल के सिद्धहस्त जनकवि बावला का निधन हो गया। भीषमपुर गाँव के किसान के बेटे रामजियावन दास बावला की प्रसिद्धि देशभर में थी लेकिन वह कभी धन के पीछे नहीं भागे। उनका जीवन पुश्तैनी खपरैल के मकान में ही भोजपुरी की अलख जगाते बीता। सन् 2002 में कोलकाता में आयोजित विश्व भोजपुरी सम्मेलन में भोजपुरी की ऐसी छाप छोड़ी की तत्कालीन राज्यपाल वीरेन्द्र शाह ने ताज पहनाकर मंच से उन्हें सेतु सम्मान से सम्मानित किया। गोरखपुर में संगम समारोह हो या फिर अन्तर्राज्यीय संगीत प्रतियोगिता सभी जगह अपनी छाप छोड़ी। साहित्यकार प्रो० विद्यानिवास मिश्र ने भोजपुरी के तुलसीदास जैसी उपाधि से उन्हें सम्मानित किया। सन् 1952 में राजदरी के जंगल में भैंस चराने के दौरान अचानक मन में विचार आया कि जिस तरह मैं जंगल, पहाड़ की खाक छान रहा हूँ उसी तरह भगवान राम भी दुःख व परेशानी झेले होंगे। फिर क्या था, उन्होंने शुरू कर दी रामचरितमानस को भोजपुरी में लिखना लेकिन लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड पूरा नहीं कर सके।

प्रो० भोलाभाई पटेल का निधन

20 मई को प्रसिद्ध गुजराती समालोचक और लेखक भोलाभाई पटेल का निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे। पटेल 1969 से 1994 तक भाषा साहित्य भवन, गुजरात विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और अध्यक्ष रहे। 1992 में श्रेष्ठ गुजराती ग्रन्थ के लिए और 1998 में श्रेष्ठ अनुवाद के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

कवि श्री भगवत रावत नहीं रहे

25 मई को हिन्दी के वरिष्ठ कवि श्री भगवत रावत का भोपाल स्थित उनके निवास पर निधन हो गया। वे 73 वर्ष के थे। उनकी कविताएँ रूसी भाषा में भी अनूदित हुई हैं। उन्हें 'दुष्यन्त कुमार पुरस्कार', 'वागीश्वरी पुरस्कार' और मध्य प्रदेश सरकार के 'साहित्य के शिखर सम्मान' सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था।

इफ्तियार खाँ राणा

हिन्दी-उर्दू-अदब के काव्य-मंच और साहित्य में प्रतिष्ठित रायबरेली के शायर इफ्तियार खाँ राणा (46) सरे राह एक हादसे का शिकार होकर जन्नतनशीं हुए। वे उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मानित थे।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल का निधन

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की निकट सहयोगी और आजादी की लड़ाई में अपना सक्रिय योगदान देने वाली 97 वर्षीय पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित कैप्टन डॉ० लक्ष्मी सहगल का 23 जुलाई 2012 को निधन हो गया।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

एक सुबह और मिल जाती

बाबूराम त्रिपाठी

'एक सुबह और मिल जाती' कहानी-संग्रह में बारह कहानियाँ हैं, जो समाज के यथार्थ को उजागर करती हैं। यथार्थ-निरूपण अमर्यादित न हो जाय, इसका पूरा ध्यान रखा गया है। इसके अतिरिक्त भावबोध को शिल्पगत क्लिष्टता से बोझिल होने से भी बचाने का प्रयास हुआ है।

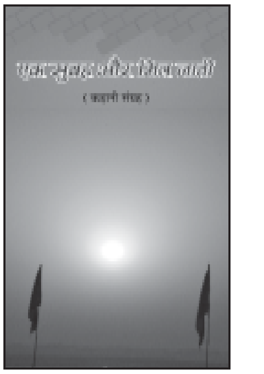

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 88

सजिल्द : 978-81-7124-873-5 • रु० 150.00

(पुस्तक की एक कहानी का अंश)

पार्वती बुआ

''क्यों, दायी मिली?'' ऑफिस से आते ही सतीश ने सुषमा से पूछा।

''दायी की जरूरत ही क्या है? हम दो ही प्राणी तो हैं, अपना काम खुद नहीं कर लेंगे? फिर काम ही कितना है?''

''देखो सुषमा, इस समय तुम इस स्थिति में नहीं हो कि हर काम खुद कर लो। डॉक्टर ने तुम्हें बेडरेस्ट की भी तो सलाह दी है।''

''पहले आप रिलैक्स होकर एक कप चाय लीजिए, फिर आपको एक ऐसा मन्त्र बताऊँगी, जिससे एक तीर से दो लक्ष्य बिधेंगे।'' इतना कहकर सुषमा रसोई में चली गयी।

सतीश की समझ में नहीं आ रहा था कि वह कौन-सा मन्त्र है, जिसने मुखर होने के पहले ही सुषमा को हर्षित कर दिया है। कपड़े बदलकर वह जैसे ही बरामदे में रखी चौकी पर बैठा, दो कप चाय लिये सुषमा हाजिर—''हाँ, तो अब आप चाय की चुस्की के साथ-साथ मेरी बात को भी सुनते चलें।''

''पहले कहो तो, सुनने के लिए तो कान खुले ही हैं।''

''वह जो तुम्हारी पार्वती बुआ हैं न, इस बार जब मैं दीवाली की छुट्टियों में गाँव गयी थी, तो संयोग से वे भी आयी थीं। कुशल-क्षेम के बाद उन्होंने अपनी मंशा जाहिर की—'बहू, अब तो सतीश का ट्रान्सफर इलाहाबाद हो गया है। सुना है, उसे बहुत अच्छा बँगला मिला है। यहाँ से जाने के बाद उसे जरा मेरे पास भेजना, मैं कुछ दिन प्रयाग-वास करना चाहती हूँ। यद्यपि घर-गृहस्थी के जंजाल से मुक्ति नहीं मिलती, फिर भी कुछ समय के लिए इस भव-जाल से निकलना चाहती हूँ, ताकि जी आन-मान हो जाय। कहने के लिए तो मेरे आगे-पीछे कोई नहीं है, पर तुम्हारे फूफा ने अपने पुरुषार्थ से जो बना दिया है, उसका रख-रखाव तो करना ही पड़ता है। अच्छा, चल रही हूँ, भूलना नहीं, पहुँचते ही उसे भेजना। देखो, यहाँ अपना सगा-सहोदर कोई नहीं है, फिर भी मायका, मायका होता है। उसके चलते साल में एकाध बार तो आ ही जाती हूँ।'

''बुआजी, आप चिन्ता क्यों करती हैं? यहाँ कोई सगा-सहोदर नहीं है, आप ऐसा क्यों सोचती हैं? हम लोग तो हैं न! आपके भतीजे तो रात-दिन आपके नाम की माला जपा करते हैं। कुछ दिन ही नहीं, हम लोग चार-छः महीने आपको अपने पास रखकर सेवा करना चाहते हैं।''

''बहू, अब तो तुम्हीं लोगों का भरोसा है। इतना कहते-कहते उनकी आँखें भर आयीं।''

पत्नी की रहस्यमय बातों से झुँझलाकर सतीश ने कहा—''तुम्हारे अन्दर यही तो कमी है, किसी बात को साफ-साफ नहीं कहोगी, लम्बी-चौड़ी भूमिका से सुनने वाला तो ऊब जाता ही है, साथ-साथ तुम भी मुख्य विषय से भटक जाती हो। तुम कहना क्या चाहती हो, इस पर आओ।''

''जब तुम इतने पर भी नहीं समझ पाये, तो इसे तुम्हारी नासमझी नहीं, तो और क्या कहेंगे?''

''यही समझ लो, पर अपनी मंशा तो जाहिर करो।''

''देखो, कल-परसों तुम्हारी छुट्टी है। सुबह गाड़ी लेकर जाओ और पार्वती बुआ को लिवा लाओ। दो-चार महीने रहेंगी, तो उनका मन बहल जायेगा।''

''अभी तुम पार्वती बुआ को नहीं जानती। वे इतनी काइयाँ हैं कि हम दोनों को बेचकर गुड़ खा जायँ।''

''तो तुम मुझे बेवकूफ समझते हो क्या? मेरी वाणी में ऐसा जादू है, कि पत्थर पिघल जाय, पार्वती बुआ किस खेत की मूली हैं। तुम उन्हें लिवा तो आओ, फिर देखो मेरा कमाल।''

दूसरे दिन लगभग दस बजे सतीश की गाड़ी पार्वती बुआ के दरवाजे पर जा रुकी। गाँव के लोगों की जिज्ञासा कुलबुलाने लगी। लोग ताक-झाँक करने लगे। 'बुआ प्रणाम' कहकर सतीश ने उनके चरण स्पर्श किये।

सतीश को देखते ही बुआ की छाती गज भर की हो गयी। आशीर्वाद देती हुई बोलीं—''खुश रहो बेटा! इतने दिनों के बाद आज कैसे अपनी इस बुआ की याद आयी?''

''बुआ, वह तुम्हारी बहू सुषमा है न, आजकल उसका ध्यान तुम्हारे ही ऊपर लगा रहता है। कल उसी ने कहा—'जाओ बुआ को लिवा लाओ, कुछ दिन यहाँ रह लेंगी, तो उनका मन बहल जायेगा। एक ही जगह रहते-रहते आदमी ऊब जाता है। फिर, हम लोगों के सिवा उनका और है ही कौन, जो उनकी खोज-खबर ले।'

''अच्छा, तो तुम अपने चेते नहीं आये हो, बहू के कहने पर तुमने इतना कष्ट उठाया? खैर, कोई बात नहीं, सच में मैं कुछ दिनों के लिए यहाँ से निकलना चाहती हूँ। बड़े समय से तुम आ गये। इसी बहाने त्रिवेणी में स्नान-ध्यान करूँगी, फिर वहीं से काशी जाकर बाबा विश्वनाथजी के भी दर्शन कर लूँगी। अब तो इस उम्र में हम जैसे लोगों का ध्यान पूजा-पाठ, तीरथ-व्रत आदि में ज्यादा रहता है न!''

बुआ के कार्यक्रम सुनकर सतीश के कान खड़े हो गये, फिर भी उसने अन्यमनस्क भाव से उन्हें आश्वस्त किया—''तुम ठीक कहती हो बुआ, इलाहाबाद से बनारस का ढाई-तीन घण्टे का ही तो रास्ता है, अपने पास गाड़ी है, काशी के सारे मन्दिरों के दर्शन करवा दूँगा।''

सुबह बुआ सज-धजकर ऐसे गाड़ी में बैठीं, जैसे सच में तीर्थ-यात्रा पर जा रही हों। रास्ते में सतीश बुआ के प्रश्नों का हाँ-हूँ में उत्तर देता रहा। लगभग दो घण्टे के बाद उसने पूछा—''बुआ, चाय पियोगी?''

''यह भी कोई पूछने की बात है? चाय की तलब तो कब से लगी है, पर तुम न जाने कहाँ खोये थे कि इतना भी होश नहीं रहा कि कहीं रुककर चाय-पानी करा दो।'' बुआ ने एक तरह से नाराजगी जाहिर की।

''क्या करूँ बुआ, मेरे ऊपर बड़ा बवाल है। घर से लेकर बाहर तक समस्याएँ ही समस्याएँ तो हैं। मन उन्हीं में उलझा रहता है। अब तो ब्लड-प्रेशर भी हाई रहने लगा है। कभी-कभी तो नींद की प्रतीक्षा में पूरी रात बीत जाती है, क्षण भर के लिए भी पलक नहीं झपती।''

''सच तो यह है कि तुम्हारी पीढ़ी जीना जानती ही नहीं। इस संसार में कौन ऐसा भाग्यवान है, जो समस्याओं से मुक्त हो और जिसकी जिन्दगी में दुःख न हो। यदि हम उसी को लेकर रोते-धोते रहेंगे, तब तो हो चुका बेड़ा पार। अब तुम अपनी ही ले लो, ईश्वर ने तुम्हें क्या नहीं दिया है? अफसरी है, बँगला है, कार है, सुन्दर और गुणवती बीवी है। अब क्या चाहिए? इसके बाद भी यदि किसी तरह का असन्तोष है, तो इसके लिए कोई क्या कर सकता है? करते रहो हाय-हाय।''.....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

प्रो० मारुतिनन्दन तिवारी का सम्मान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, कला एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष प्रो० मारुतिनन्दन तिवारी को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा ने जैन कला एवं पुरातत्व पर किये विशिष्ट कार्यों के लिए 51 हजार रुपये एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। प्रो० तिवारी ने 30 वर्षों की सेवा के दौरान जैन कला एवं पुरातत्व पर 100 से ज्यादा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोधपत्र प्रकाशित कराए हैं।

लोकगायक हीरालाल को टैगोर फेलोशिप

वाराणसी के लोकगायक हीरालाल यादव को संगीत नाटक अकादमी टैगोर फेलोशिप से सम्मानित किया गया है। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल एम०के० नारायणन् ने कोलकाता के रवीन्द्र सदन में आयोजित विशेष समारोह में उन्हें यह सम्मान दिया।

विश्वनाथ त्रिपाठी को 'शमशेर सम्मान'

कवि शमशेर बहादुर सिंह की स्मृति में स्थापित 'शमशेर सम्मान' का आयोजन 12 मई 2012 को राजेन्द्र प्रसाद अकादमी, नयी दिल्ली में सम्पन्न हुआ। यह वर्ष 2010 व 2011 का संयुक्त आयोजन था। इन दोनों वर्षों के लिए शीर्ष आलोचक नामवर सिंह ने शमशेर सम्मान सृजनात्मक गद्य स्वर्गीय कमला प्रसाद (वर्ष 2010) व वरिष्ठ रचनाकार विश्वनाथ त्रिपाठी (वर्ष 2011) को प्रदान किया। श्रीमती कमला प्रसाद परिवार सहित इस अवसर पर उपस्थित थीं, उन्होंने श्री कमलाप्रसादजी की ओर से सम्मान ग्रहण किया। कविता के लिए कवि प्रभात त्रिपाठी (वर्ष 2010) व बद्री नारायण ने नामवर सिंह के हाथों शमशेर सम्मान ग्रहण किया।

युवा शिखर सम्मान भरत प्रसाद को

साहित्य, कला व संस्कृति को समर्पित शिखर संस्था द्वारा दिये जाने वाले प्रतिष्ठित युवा शिखर सम्मान से इस बार युवा कवि व आलोचक भरत प्रसाद को अलंकृत किया गया। उन्हें यह सम्मान हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रो० प्रेम कुमार धूमल ने विगत दिनों शिमला में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया।

प्रदीप सौरभ एवं सोहन राही को सम्मान

कथा (यू०के०) संस्था के महासचिव एवं प्रतिष्ठित कथाकार तेजेन्द्र शर्मा (लन्दन) की सूचना के अनुसार वर्ष 2012 के लिए 'अन्तर्राष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान' पत्रकार कथाकार प्रदीप सौरभ को उनके उपन्यास 'तीसरी तीली' पर देने का निर्णय लिया गया है। सम्मान लन्दन के हाउस ऑफ कॉमन्स में विगत दिनों एक आयोजन में प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त वर्ष 2012 के लिए पद्मानन्द साहित्य सम्मान इस बार सर्रे निवासी सोहन राही को उनके ग़ज़ल एवं गीत-संग्रह 'कुछ गजलें कुछ गीत' के लिए दिया जा रहा है।

सुलभ कला सर्जक सम्मान

आजादी पूर्व से लेकर आज तक सक्रिय बहुआयामी व्यक्तित्व प्रख्यात प्रेस फोटो पत्रकार पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर को उनकी जनोपयोगी कला एवं साहित्यिक सेवाओं के लिए सुलभ इण्टरनेशनल के संस्थापक बिन्देश्वर पाठक द्वारा एक गरिमापूर्ण समारोह में यह सम्मान प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें दो लाख रुपये की राशि, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

'वर्तमान साहित्य' पुरस्कार समारोह

'वर्तमान साहित्य' पत्रिका की ओर से छठा वर्तमान साहित्य-पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। कमलेश्वर कहानी-पुरस्कार लन्दन से पधारे प्रतिष्ठित कहानीकार महेन्द्र द्ववेसर 'दीपक' तथा मलखान सिंह सिसौदिया कविता-पुरस्कार चर्चित युवा कवि शैलेय को दिया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध आलोचक डॉ० विजय बहादुर सिंह ने 'साहित्य की स्वायत्तता का प्रश्न' पर अपना व्याख्यान दिया। दोनों ही पुरस्कृत रचनाकारों को विजय बहादुर सिंह तथा कार्यक्रम अध्यक्ष एवं उर्दू के वरिष्ठ कथाकार काज़ी अब्दुल सत्तार के हाथों पुरस्कार दिया गया।

'सूत्र सम्मान' विमलेश त्रिपाठी को

बिलासपुर 'सूत्र सम्मान' समारोह का आयोजन बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के महुआ होटल में सम्पन्न हुआ। समारोह में कोलकाता के युवा कवि विमलेश त्रिपाठी को 14वाँ 'सूत्र सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस आयोजन के अध्यक्ष थे छत्तीसगढ़ अंचल के वरिष्ठ कवि श्री कसाब।

बाल साहित्यकार सम्मान समारोह सम्पन्न

भारतरत्न डॉ० भीमराव अम्बेडकर जयन्ती के दिन भोपाल में बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र, भोपाल का चतुर्थ वार्षिकोत्सव एवं 'बाल साहित्यकार सम्मान समारोह' सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ० दर्शन सिंह आशट को 'श्री भीष्म सिंह चौहान स्मृति बाल साहित्य सम्मान', श्री राजीव सक्सेना को 'श्री राजेन्द्र अनुरागी स्मृति बाल साहित्य सम्मान', डॉ० मधुसूदन साहा को 'श्री रामचरण लाल सक्सेना स्मृति बाल साहित्य सम्मान', डॉ० अजय जनमेजय को 'श्री जे० प्रसाद स्मृति सम्मान', श्री अहद प्रकाश को 'श्री हरिकृष्ण बीराना वली ग्रोवर बाल साहित्य सम्मान', श्री नागेश पाण्डेय 'संजय' को 'शिव नारायण सूर्यवंशी स्मृति बाल साहित्य सम्मान', श्रीमती मुक्ता चन्दानी को 'श्रीमती चन्द्रकान्ता लूनावत स्मृति बाल सम्मान', श्री गोपीनाथ कालभोर को 'श्री राजेन्द्र सिंह भदौरिया स्मृति बाल साहित्य सम्मान', श्रीमती साधना श्रीवास्तव को 'श्रीमती विद्या देवी भदौरिया स्मृति बाल साहित्य सम्मान', श्री आशीष शुक्ला को 'श्रीमती सुलेखा भल्ला स्मृति बाल साहित्य सम्मान', श्रीमती सावित्री चौरसिया को 'श्रीमती उमा गौतम स्मृति बाल साहित्य सम्मान', श्री राजेन्द्र शर्मा 'अक्षर' को 'श्री ब्रह्मदत्त तिवारी बाल साहित्य सम्मान', डॉ० हरिकृष्ण 'हरि' को 'श्रीमती मीरा तिवारी बाल साहित्य सम्मान', श्री अनहद बजाज को 'श्याम-सुधा (परिमार्जन) बाल साहित्य सम्मान' तथा श्री उदय किरौला को 'श्रेष्ठ बाल साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। श्रीमती प्रीति प्रवीण खरे की 'चश्मा दीदी का', श्रीमती आशा श्रीवास्तव की 'हँसता बचपन', डॉ० सुषमा तिवारी की 'सागर कथा', श्री गजेन्द्र सिंह भदौरिया की 'छोटे-छोटे कदम', श्री राजेन्द्र सिंह सेंगर की 'बच्चे लगते प्यारे' तथा श्रीमती मुक्ता चन्दानी की 'पावन बचपन' पुस्तकों का लोकार्पण हुआ।

डॉ० ज्ञानेन्द्र माहेश्वरी अलंकृत

विगत दिनों छत्तीसगढ़ में न्यू ऋतम्भरा साहित्यिक मंच-कुम्हारी (दुर्ग) द्वारा वरिष्ठ कवि एवं साहित्याचार्य डॉ० ज्ञानेन्द्र माहेश्वरी को हिन्दी साहित्य में सृजनात्मक-रचनात्मक योगदान एवं काव्य-रचना क्षेत्र में अप्रतिम अवदान हेतु 'न्यू ऋतम्भरा तुलसीदास सम्मान एवं साहित्य अलंकरण 2012' से अलंकृत किया गया।

कवि हलीम 'आईना' सम्मानित

कोटा में लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कवि श्री हलीम 'आईना' को राष्ट्रीय स्तर पर उनकी श्रेष्ठ साहित्यिक सेवाओं के लिए साहित्य संगम, तिरोड़ी बालाघाट (म०प्र०) द्वारा 'साहित्य भास्कर 2012' सम्मानोपाधि, प्रतीक चिह्न, शॉल एवं सम्मान राशि देकर सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह सम्पन्न

मुरादाबाद की साहित्यिक संस्था 'अक्षरा' के तत्वावधान में मानसरोवर कन्या इण्टर कॉलेज के सभागार में नवगीतकार डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र को गीत-नवगीत के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय साहित्य सृजन के लिए 'अक्षरा नवगीत-साधक सम्मान' स्वरूप प्रतीक-चिह्न, मानपत्र, अंगवस्त्र तथा श्रीफल भेंट किया गया।

सम्मान समारोह आयोजित

ब्रज लोक समिति के तत्वावधान में निकुंज निवासिनी डॉ० हर्षनन्दिनी भाटिया की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर स्वामी रामतीर्थ मिशन, हरिओम नगर, अलीगढ़ में ब्रज लोक साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए दो विद्वान् लेखकों डॉ० पवित्रा सुहृदय और डॉ० उमाशंकर दीक्षित को 'डॉ० हर्षनन्दिनी भाटिया स्मृति पुरस्कार-2012' के अन्तर्गत सम्मान-पत्र, माँ सरस्वती की प्रतिमा, 5100 रुपये की राशि तथा उत्तरीय ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ ने की।

वर्ष 2010 के पुरस्कार एवं पाण्डुलिपि प्रकाशन सहायता अनुदान की घोषणा

मध्य प्रदेश। राज्य की साहित्य अकादमी संस्कृति परिषद ने विभिन्न विधाओं में श्रेष्ठ कृतियों पर अखिल भारतीय और प्रादेशिक स्तर के वर्ष 2010 के पुरस्कार एवं पाण्डुलिपि प्रकाशन सहायता अनुदान की घोषणा की है।

साहित्य अकादमी के निदेशक प्रो० त्रिभुवननाथ शुक्ल ने बताया कि प्रतिवर्ष अकादमी द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कारों में वर्ष 2010 का अखिल भारतीय माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार डॉ० शिवशंकर कटारे को 'चम्बल तेरी बात निराली' (निबन्ध), अखिल भारतीय मुक्तिबोध पुरस्कार भी कुँवर किशोर टण्डन को अनावरण (कहानी), अखिल भारतीय वीरसिंह देव पुरस्कार डॉ० मीनाक्षी स्वामी को नतोऽहं (उपन्यास), अखिल भारतीय भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार डॉ० मधुरिमा सिंह को स्वयंसिद्धा यशोधरा (कविता) एवं अखिल भारतीय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार (आलोचना) के लिए प्रो० अरुण होता को 'आधुनिक हिन्दी कविता : युगीन सन्दर्भ' (आलोचना) के लिए घोषित किये गये।

जगदीश किंजल्क सम्मानित

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन का चौबीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन 2012, भोपाल में रोटरी सेवा भवन, बाणगंगा में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रसिद्ध साहित्यकार एवं राष्ट्रीय ख्याति की साहित्यिक पत्रिका 'दिव्यालोक' के सम्पादक श्री जगदीश किंजल्क को 'राष्ट्रीय संवाद श्री' सम्मान से अलंकृत किया गया।

मीरा-स्मृति पुरस्कार

प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने भोपाल में कवि पंकज राग को मीरा-पुरस्कार देते हुए कहा कि पूरे विश्व में पूँजीवादी ताकतें उभरकर सामने आयी हैं और वे आज अखण्ड राज्य कर रही हैं। हमारा देश इसी तरफ बढ़ रहा है। ऐसे में जनता को यह चुनना है कि वह किसका पक्ष ले। उन्होंने पंकज राग की तीन कविताओं पर विशेष रूप से चर्चा की, जो दिल्ली, बुरहानपुर तथा 1857 की क्रान्ति पर केन्द्रित थी। कार्यक्रम में डॉ० रामविलास शर्मा की पुस्तक 'प्रगतिशील काव्य-धारा और केदारनाथ अग्रवाल', डॉ० लक्ष्मी श्रीवास्तव की पुस्तक 'कला निनाद', डॉ० मीरा सिंह की पुस्तक 'श्रीमद्-भगवद्गीता और तिरुक्कुरल एवं नवीन विवेचन' का लोकार्पण भी प्रो० नामवर सिंह ने किया।

डॉ० भवानीलाल भारतीय सम्मानित

डी०ए०वी० कॉलेज, लाहौर के संस्थापक एवं प्रथम प्राचार्य महात्मा हंसराज के 148वें जन्मदिवस पर आयोजित समारोह में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं साहित्यकार डॉ० भवानीलाल भारतीय का विशिष्ट विद्वान् एवं शोधकर्मी के रूप में सम्मान किया गया। डी०ए०वी० प्रबन्धक समिति, दिल्ली के अध्यक्ष पूनम सूरी ने उन्हें शाल एवं अभिनन्दन पत्र समर्पित करने के साथ इकतीस हजार की राशि भेंट की। इनके अतिरिक्त कतिपय संन्यासियों व शिक्षा से सम्बद्ध व्यक्तियों का भी सम्मान किया गया।

हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान 2012

14 सितम्बर 2012 को 'हिन्दी लाओ : देश बचाओ' अनुष्ठान के अवसर पर हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान : 2012 का पुरस्कार लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ समीक्षक एवं सम्पादक प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित को देना सुनिश्चित किया गया है। यह सम्मान श्रीनाथद्वारा में 'साहित्य-मण्डल' द्वारा आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया जायेगा। सम्मानस्वरूप अभिनन्दन एवं सम्मान-पत्र सहित ग्यारह हजार की राशि भेंट की जायेगी।

डॉ० (सुश्री) शरद सिंह सम्मानित

विगत दिनों महाराजा छत्रसाल जयन्ती के अवसर पर अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद्, भोपाल (म०प्र०) द्वारा राजभवन में आयोजित गरिमामय बुन्देलत्रयी सम्मान समारोह में मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल रामनरेश यादव द्वारा सुपरिचित कथाकार, उपन्यास तथा स्त्री-विमर्श की लेखिका डॉ० (सुश्री) शरद सिंह को उनकी पुस्तक 'पत्तों में कैद औरतें' के लेखन के लिए 'जौहरी सम्मान' से सम्मानित किया गया। शरद सिंह की यह पुस्तक बुन्देलखण्ड की बीड़ी-महिला श्रमिकों पर केन्द्रित है।

प्रा० स्वानंद गजानन पुंड सम्मानित

प्रा० स्वानंद गजानन पुंड की सतत सारस्वत साधना का एक प्रधान प्रकल्प है 21 ग्रन्थात्मक ग्रन्थमाला 'श्रीगणेशोपासना'। एक ही लेखक द्वारा लिखित, एक ही प्रकाशक द्वारा प्रकाशित, एक ही विषय को समर्पित सर्वाधिक ग्रन्थ इस रूप में इस विशाल योजना को 'लिम्का बुक ऑफ रेकॉर्ड' के 2012 के अंक में विक्रमरूप में स्थान मिला है।

ये सभी 21 ग्रन्थ अपने आप में स्वतन्त्र हैं और एकत्रित रूप से एक महानतम कोश है। यह स्वरूप ही इसकी अनूठी विशेषता है।

बाहेती दम्पति

प्रो० (डॉ०) जमनालाल बायती एवं उनकी सहधर्मिणी पत्नी डॉ० श्रीमती कृष्णा माहेश्वरी को भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् एवं पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, शिलांग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय हिन्दी विकास सम्मेलन में समग्र हिन्दी विकास के योगदान के लिए सम्मानित किया गया। सम्मान-स्वरूप स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र, श्रीफल, सम्मान-पत्र मेघालय राज्य के उप मुख्यमन्त्री श्री बी०एम० लानोंग द्वारा प्रदान किये गये। सम्मेलन में देशभर से पधारे लगभग 2500 हिन्दीप्रेमियों की उपस्थिति में 80 प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

डॉ० श्रीप्रसाद को 'रेखा जैन बालरंग' सम्मान

दिल्ली के कमानी सभागार में हिन्दी के वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ० श्रीप्रसाद को 'उमंग' बाल नाट्य संस्था की ओर से 'रेखा जैन बाल रंग सम्मान 2012' प्रदान किया गया। 'उमंग' संस्था की स्थापना रेखा जैन ने बालरंग मंच के विकास के लिए की थी। सम्मान के अन्तर्गत आपको संस्था का प्रतीक चिह्न, पच्चीस हजार रुपये और मानपत्र भेंट किया गया।

'नटवर गीत सम्मान 2012'

भोपाल से प्रकाशित शोधपरक सत्-साहित्यिक मासिक पत्रिका 'साहित्य सागर' द्वारा गीत विधा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रवर्तित 'नटवर गीत सम्मान' (रुपये 11000) के लिए इस वर्ष भोपाल की युवा गीतकार श्रीमती मधु शुक्ला को प्रतियोगिता के माध्यम से चुना गया है।

राहुल भट्टाचार्य को ब्रिटिश कथा पुरस्कार

भारतीय युवा लेखक राहुल भट्टाचार्य ने प्रतिष्ठित रॉयल सोसाइटी ऑफ लिटरेचर ओंडात्जे पुरस्कार 2012 जीता। उनकी पुस्तक 'द स्लाइ कम्पनी ऑफ पीपुल हू केयर' को पुरस्कार के लिए चुना गया। यह पुरस्कार ब्रिटेन की सोसाइटी ऑफ लिटरेचर की ओर से दिया जाता है।

प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

साहित्यिक संस्था 'अक्षरा' के तत्वावधान में स्व० श्री देवराज वर्मा की सप्तम पुण्यतिथि 7 दिसम्बर, 2012 को उत्कृष्ट साहित्यिक कृति पर प्रदान किए जाने वाले 'देवराज वर्मा उत्कृष्ट साहित्य सृजन सम्मान 2012' हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इस वर्ष यह सम्मान काव्य की उत्कृष्ट मौलिक कृति को दिया जाएगा। काव्य की किसी भी विधा में वर्ष 2010 तथा 2011 में प्रकाशित मौलिक साहित्यिक कृति प्रविष्टि हेतु 31 अगस्त, 2012 तक श्री योगेन्द्र वर्मा 'व्योम', संयोजक, साहित्यिक संस्था 'अक्षरा', ए०एल०-49, सचिन स्वीट्स के पीछे, दीनदयाल नगर, फेज-प्रथम, काँठ रोड, मुरादाबाद-244001 को भेज सकते हैं।

मलखान सिंह सिसौदिया कविता-पुरस्कार 2012

पुरस्कार की राशि रु० 10 हजार, वर्ष 2012 के पुरस्कार हेतु 30 सितम्बर, 2012 तक प्राप्त प्रविष्टियाँ ही मान्य होंगी।

वर्तमान साहित्य-कमलेश्वर कहानी पुरस्कार

वर्तमान साहित्य-कमलेश्वर कहानी पुरस्कार-2012 के लिए मौलिक, अप्रकाशित कहानियाँ आमंत्रित हैं। पुरस्कार राशि रु० 11,000.00 है, जो कमलेश्वर जी के परिवार ने इस प्रयोजन हेतु 'वर्तमान साहित्य' को प्रदान की है। उपरोक्त की जानकारी हेतु सम्पर्क करें—

सम्पादक, वर्तमान साहित्य, 28-एम०आई० जी०, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़-01

हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास

प्रो० वशिष्ठ अनूप

यह पुस्तक आज से लगभग एक दशक पहले प्रकाशित हुई थी और इसके तीन संस्करण छप चुके हैं। इस बीच साहित्य जगत् में बहुत कुछ बन-बदल गया है। इसलिए इस पुस्तक के संशोधन, परिवर्धन और कुछ पुनर्लेखन की आवश्यकता अनुभव हुई। इस पुस्तक में हर विधा की अद्यतन उपलब्धियों को जोड़ दिया गया है। गीत, गज़ल और जनवादी कविता को तो पहले ही शामिल किया जा चुका था, इस संस्करण में बिल्कुल नये विमर्शों—उत्तर आधुनिकता और साहित्य, दलित-विमर्श और साहित्य, स्त्री-विमर्श और साहित्य तथा आदिवासी विमर्श और साहित्य को भी पहली बार (और साहित्य के इतिहास में भी पहली बार) व्यवस्थित ढंग से मूल्यांकित किया गया है। इस प्रकार यह सही अर्थों में हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास है।

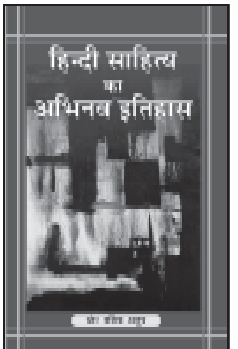

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 348

सजिल्द : 978-81-7124-865-0 • रु० 400.00

अजिल्द : 978-81-7124-866-7 • रु० 190.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

दलित विमर्श और दलित साहित्य

दलित साहित्य दलित साहित्यकारों द्वारा अपने भोगे हुए दु:ख-दर्द, उपेक्षा, अपमान, शोषण, अत्याचार और प्रताड़नाजन्य अनुभवों की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। उसमें वर्ण-व्यवस्था, छुआछूत, असमानता और सामन्ती मूल्यों के प्रति गहरा असन्तोष, विरोध और विद्रोह है। 'दलित' शब्द का अर्थ 'संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर' में डॉ० रामचन्द्र वर्मा ने—"विनष्ट किया हुआ, मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौंदा या कुचला हुआ, खण्डित, विनष्ट किया हुआ" दिया है। दलित के लिए पहले अस्पृश्य, चण्डाल, पंचमा, द्रविड़, चमार, हरिजन, शूद्र आदि प्रयुक्त होते थे। इस शब्द का प्रयोग आर्य समाज ने दलितोद्धार कार्यक्रम में किया था। दलित पैंथर्स ने इस शब्द को 1970 ई० में अखिल भारतीय स्तर पर प्रचारित किया। ओमप्रकाश वाल्मीकि की दृष्टि में, "दलित शब्द का अर्थ है जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, विनष्ट, मर्दित, पस्त-हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि।" (दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ० 13) इसमें दलित शब्द के सारे अर्थ-रूप आ गये हैं। डॉ० विमल थोराट ने लिखा है कि, "दलित कविता जीवन के यथार्थ की कविता है।.... वह क्रान्ति का सन्देश देने वाली और अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली एक प्रखर विचारधारा की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।" (उद्धृत, दलित-निर्वाचित कविताएँ, सं० कंवल भारती, पृ० 23) विमल थोराट की यह बात समस्त प्रगतिशील-जनवादी साहित्य के लिए भी सत्य है। कंवल भारती की मान्यता है कि, "दलित कविता सिर्फ इसलिए दलित कविता नहीं है कि वह दलित जीवन से जुड़ी है, बल्कि वह इसलिए भी दलित कविता है कि उसने शोषण करने वाली व्यवस्था को बेनकाब किया है। वह न सिर्फ राजसत्ता से बल्कि धर्मसत्ता से भी टक्कर लेती है। दलित स्वभावत: क्रान्ति चाहता है, अन्यथा वह धर्मान्तरण नहीं करता।" (वही)

दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि

दलित आन्दोलन हर प्रकार के शोषण से मुक्ति तथा दलित सशक्तिकरण का आन्दोलन है। जाति-व्यवस्था और उसकी विकृतियों का विरोध 19वीं सदी में आरम्भ हुआ था। वैचारिकी के स्तर पर राजा राममोहन राय ने जो पहल जाति-व्यवस्था के विरुद्ध की थी, उसका स्वर आगे तीव्र हुआ। दक्षिण में पेरियार रामास्वामी नायर, महात्मा ज्योतिबा फुले, नारायण गुरु तथा डॉ० भीमराव अम्बेडकर इस परिवर्तन के अग्रदूत माने जाते हैं। दलित आन्दोलन के मुख्यत: तीन चरण हैं।

महाराष्ट्र में सबसे पुराने एवं चर्चित आन्दोलनकारियों में प्रमुख रूप से महात्मा ज्योतिबा राव फुले (1827-1890 ई०) हैं। महात्मा फुले शूद्रों, अतिशूद्रों और स्त्रियों का अज्ञान दूर करके उनकी गुलामी की जंजीरें तोड़ना चाहते थे। फुले ने 1848 ई० में पुणे के बुधवार पेठ में अस्पृश्य बच्चों के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। अशिक्षा को वे सबसे बड़ा अभिशाप मानते थे। इसीलिए स्त्रियों के लिए भी उन्होंने 3 जुलाई 1853 ई० में एक विद्यालय की स्थापना की। उन्होंने 24 सितम्बर 1873 ई० में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। सभी धार्मिक अनुष्ठानों से ब्राह्मणों के वर्चस्व को समाप्त करने का बीड़ा सत्यशोधक समाज ने उठाया था।

महात्मा फुले की क्रान्तिकारी पुस्तक 'गुलामगीरी' 1873 ई० में प्रकाशित हुई थी। फुले ने इस पुस्तक की प्रस्तावना में दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका के काले गुलामों के जीवन का रोंगटे खड़े कर देने वाला वर्णन किया है। इसमें अछूतों की पीड़ादायक गुलामी के जो चित्र मिलते हैं उससे 19वीं शताब्दी के आधुनिक भारत के समाज की उस वास्तविक तस्वीर का पता चलता है जिसे ब्राह्मणों ने बनाया था। उन्होंने लिखा है कि "...गुलाम जातियों को कितनी यातनाएँ सहनी पड़ती हैं, इसे स्वयं अनुभव किये बिना अन्दाजा करना मुश्किल है। जो सहता है, वही जानता है।"

केरल में नारायण गुरु (1854 ई०) ने जाति-प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। वह केरल की 'ईझवा' नामक दलित जाति में पैदा हुए थे। इनका लोकप्रिय नारा था, 'जाति मत पूछो, जाति मत बताओ और जाति के बारे में मत सोचो।' इस आन्दोलन ने साहित्य में नयी रचनाशीलता को जन्म दिया। उन्होंने मन्दिरों का विरोध न करके ऐसे मन्दिर बनवाये जिनमें अछूत बिना-टोक जा सकते थे। यह ब्राह्मणों के प्रति खुला विद्रोह था। नारायण गुरु के आन्दोलन ने नयी रचनाशीलता को जन्म दिया। कुरुप्पन् और कुमार आशान जैसे महत्त्वपूर्ण कवि इसी आन्दोलन की उपज थे।

दक्षिण भारत में जाति-प्रथा और ब्राह्मणवाद के विरुद्ध आन्दोलन चलाने वाले पेरियार रामास्वामी का नाम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनका जन्म 17 सितम्बर 1879 को 'गड़ेरिया' जाति में तमिलनाडु प्रान्त में हुआ था। वे परिवार के मना करने के बावजूद अछूत बालकों के साथ खेलते थे। अछूत बालकों के पढ़ने पर रोक के कारण उन्होंने स्वयं भी स्कूल जाने से इनकार कर दिया, अत: प्राथमिक कक्षा तक ही पढ़ सके। वे कांग्रेस के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े थे। 1944 ई० में उन्होंने 'द्रविड़ कड़गम' पार्टी की स्थापना की। इन्होंने वायकोम सत्याग्रह (1925 ई०) चलाया जिससे 'एझवा' और 'पुलैया' नामक दलित जातियों को मन्दिरों में प्रवेश मिला। रामास्वामी ने स्पष्ट घोषणा की थी, "भारत में जब तक ईश्वर का अस्तित्व रहेगा, तब तक छुआछूत रहेगी।" रामास्वामी अछूत और पिछड़ी जातियों तथा स्त्रियों की शिक्षा के इस हद का समर्थक थे कि उन्होंने इसमें बाधा बनने वाले ब्राह्मणों को हमेशा के लिए शिक्षा से वंचित कर देने की आवाज उठायी थी। उन्होंने रामायण का जबर्दस्त विरोध किया और रावण-दहन के विरुद्ध राम, लक्ष्मण और भरत के पुतले जलवाये थे।....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

संगोष्ठी/लोकार्पण

स्व० पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी स्मृति सर्वभाषा काव्य गोष्ठी

ज्ञानपुर (भदोही) स्थित विश्व भारती अनुसन्धान परिषद्, मनीषी परिषद् एवं हिन्दी साहित्य परिषद्, ज्ञानपुर के संयुक्त तत्वावधान में पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के निवास पर स्व० डॉ० कपिलदेव द्विवेदी स्मृति सर्वभाषा काव्य गोष्ठी तथा माँ गंगा विषयक विचार एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता श्री विन्ध्यवासिनी त्रिपाठी ने की।

भाषा, मीडिया और बाज़ार

''भाषा बहता नीर है, भाषा स्थिर नहीं होती। उसमें सतत प्रवाह होता है। भाषा के विकास के लिए परिवर्तन आवश्यक शर्त है। भाषा में हो रहे परिवर्तनों से भयभीत नहीं होना चाहिए। 'छूना मत छाया' की प्रवृत्ति से हमें बचना होगा। हिन्दी ने बाज़ार के सहारे विस्तार पाया है, आज विश्व स्तर पर पाँच सौ हिन्दी चेयर कार्यरत हैं। 'भाषा, मीडिया और बाज़ार' विषय पर केन्द्रित इस गोष्ठी के माध्यम से बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल सामने आये हैं।'' उक्त बातें महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र, इलाहाबाद द्वारा आयोजित गोष्ठी में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो० निर्मला जैन ने कही। गोष्ठी के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कथाकार श्री विभूति नारायण राय ने कहा कि किसी भी भाषा की सर्वग्राही प्रकृति उसके विकास में मदद करती है। हिन्दी के विकास में भारत का मध्य वर्ग और बाज़ार बड़ी भूमिका अदा कर रहा है, मीडिया भाषा को नया तेवर दे रहा है। कथाकार एवं कवि गंगाप्रसाद विमल ने कहा कि बाज़ार अपनी भाषा गढ़ता है। नवसाम्राज्यवाद विश्व स्तर पर भाषाओं के साथ एक जैसा व्यवहार करता है, उसकी बारीकी से पहचान होनी चाहिए। प्रो० उमाशंकर उपाध्याय ने कहा कि बाज़ार समाज का अमानवीयकरण कर रहा है। मानवीय सम्बन्ध खत्म हो रहे हैं, जब सब कुछ संकट में है तो भाषा भी है। विषय की प्रस्तावना रखते हुए प्रो० धनंजय चोपड़ा ने कहा कि भाषा में जातीय अनुगूँज गायब हो रही है। मीडिया से हमारे हिस्से की खबर गायब हो रही है। गोष्ठी का संयोजन एवं संचालन क्षेत्रीय केन्द्र के प्रभारी सन्तोष भदौरिया द्वारा किया गया।

अभियान के रूप में हिन्दी मेला

कोलकाता में हिन्दी मेला का यह 17वाँ साल था। बांग्ला के प्रसिद्ध कवि नवारूण भट्टाचार्य ने इसका उद्घाटन करते हुए इसे हिन्दी नौजवानों और विद्यार्थियों की सांस्कृतिक जागृति का चिह्न बताया एवं कहा कि इसमें शामिल होना मेरे लिए गौरव की बात है। उद्घाटन सत्र में प्रो० शम्भुनाथ ने कहा कि यह पश्चिमी मनोरंजन की आयी सुनामी का जवाब है। इस साल का मेला 'मानवीय मूल्यों के क्षय' पर केन्द्रित था। 25 साल से कम उम्र के नौजवानों ने इस विषय पर चित्र बनाये, पैनल डिस्कशन किया, लघु नाटक और नृत्य प्रदर्शित किये। इनके अलावा कविता-पाठ, लोकगीत, काव्य संगीत और हिन्दी प्रश्न मंच के भी कार्यक्रम थे। लगभग 40 शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। यह आयोजन 'सांस्कृतिक पुनर्निर्माण मिशन' ने किया था।

17वें हिन्दी मेले में 'रामविलास शर्मा और हिन्दी जाति की अवधारणा' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित हुई। इसकी अध्यक्षता करते हुए पी०एन० सिंह ने कहा, 'हिन्दी जाति अभी निर्माण की प्रक्रिया में है। हिन्दी जाति जब भी बनेगी, इसकी बोलियों को समेटते हुए बनेगी।'

मंटो जन्मशती का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

हिन्दी भवन और आलमी उर्दू ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में प्रसिद्ध लेखक 'सआदत हसन मंटो' की जन्मशती वर्ष का उद्घाटन समारोह हिन्दी भवन सभागार में आयोजित किया गया, जिसमें हिन्दी-उर्दू के प्रमुख लेखक, पत्रकार और साहित्यकार काफी संख्या में उपस्थित थे। हिन्दी भवन के अध्यक्ष एवं 'साहित्य अमृत' के सम्पादक श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी की अध्यक्षता में इस आयोजन का प्रारम्भ मुख्य चुनाव आयुक्त श्री एस०वाई० कुरैशी ने किया। इस अवसर पर डोगरी की प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेव, आलमी उर्दू ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ए० रहमान के अलावा सर्वश्री मतीन अमरोही, केवल धीर, शकील शम्सी, असद रजा, अख्तर उलवासे आदि ने भी अपने विचार रखे।

बिहार राज्य जनवादी सांस्कृतिक मोर्चा का नौवाँ राज्य सम्मेलन सम्पन्न

'विकल्प' अखिल भारतीय जनवादी सांस्कृतिक सामाजिक मोर्चा से सम्बद्ध बिहार राज्य जनवादी सांस्कृतिक मोर्चा का 9वाँ सम्मेलन छपरा के सारण जनपद के गाँव कोहड़ा बाजार में साहित्य, कला, संस्कृति के क्षेत्र में नई संकल्पबद्धता के साथ सम्पन्न हुआ।

सबसे बड़ी विशेषता यह कि शहरी तामझाम और मीडिया की चमक-दमक से अप्रभावित यह सम्मेलन पूरी तरह ग्रामीण परिवेश में आयोजित किया गया। भोजपुरी भाषा-भाषी इस अंचल में आज भी महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, शहीद छट्टू गिरि, भिखारी ठाकुर और महेन्द्र मिसिर के सृजन और संघर्षों की गाथायें और सुगन्ध व्याप्त हैं।

शंकर दयाल सिंह का स्मरण

राजनेता एवं साहित्यकार स्वर्गीय शंकर दयाल सिंह का पचहत्तरवाँ जन्मदिन अमृत महोत्सव के रूप में मनाने के अन्तर्गत मडगाँव में 'हिन्दी : जनभाषा-राजभाषा-राष्ट्रभाषा' विषय पर गोमान्तक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ के तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पद्मश्री डॉ० श्यामसिंह शशि मुख्य अतिथि थे। शंकर-संस्कृति प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ० हीरालाल बाछोतिया, डॉ० किरण पोपकर, रमेश वेलुस्कर ने विचार व्यक्त किये।

सातवाँ निर्मल स्मृति व्याख्यान सम्पन्न

दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर एनेक्सी सभागार में सातवाँ निर्मल वर्मा स्मृति व्याख्यान आयोजित किया गया। श्री कुँवर नारायण मुख्य अतिथि थे व श्री कैलाश वाजपेयी ने अध्यक्षता की। कार्यक्रम का शुभारम्भ वरिष्ठ लेखिका श्रीमती राजी सेठ की सारगर्भित प्रस्तावना से हुआ। डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय ने अपने विचार प्रकट किए।

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला सम्पन्न

कोलकाता में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्वावधान में आयोजित आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के सातवें स्मृति आयोजन में 'सन्तों की जीवन दृष्टि और हमारा समय' विषय पर प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० देवेन्द्र दीपक ने स्थानीय महाजाति सदन एनेक्सी में व्याख्यान दिया।

जन्मशती समारोह सम्पन्न

आकाशवाणी दिल्ली द्वारा गुलमोहर सभागार, इण्डिया हेबीटेट सेण्टर, लोदी रोड, नयी दिल्ली में कविवर भवानीप्रसादमिश्र जन्मशती समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि एवं आलोचक श्री अशोक वाजपेयी थे, अध्यक्षता वरिष्ठ कवि श्री केदारनाथ सिंह ने की व मुख्य वक्ता श्री विजय बहादुर सिंह थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री भवानीप्रसाद मिश्र की कुछ प्रतिनिधि और लोकप्रिय कविताओं के वाचन से हुआ। कार्यक्रम में सर्वश्री भवानी बाबू के सुपुत्र सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् श्री अनुपम मिश्र ने अपने पिता के जीवन के कुछ अविस्मरणीय पलों को सबके साथ बाँटते हुए उनकी सादगी और सहजता को रेखांकित किया।

संगोष्ठी सम्पन्न

अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रिका सम्पादक संघ तथा यू०एस०एम० पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान के सहयोग से गाँधी प्रतिष्ठान सभागार में '10वें साहित्यिक पत्रकारिता दिवस' के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में 'पत्रकारिता का साहित्यिक, सांस्कृतिक स्वरूप और इसकी सामाजिक महत्ता' विषय पर सर्वश्री रत्नाकर पाण्डेय, मृदुला सिन्हा, ज्ञानेन्द्र पाण्डेय, राजकुमार सचान 'होरी' तथा लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। 'अवध भारती समिति', बाराबंकी की ओर से अध्यक्ष डॉ० रामबहादुर मिश्र तथा कोषाध्यक्ष श्री विष्णु कुमार शर्मा ने श्री उमाशंकर मिश्र को 'मृगेश स्मृति

सम्मान', प्रशस्ति-पत्र, अंगवस्त्र, शॉल व माँ सरस्वती की प्रतिमा भेंट करके सम्मानित किया। नव सप्तक साहित्य शृंखला के काव्य सप्तक-6 'बस, इसी एक आस में' का लोकार्पण किया।

'मैं कौन हूँ' विषयक संगोष्ठी सम्पन्न

विगत दिनों इण्डियन सोसाइटी ऑफ ऑथर्स एवं इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर के तत्वावधान में आयोजित मासिक गोष्ठी 'मैं कौन हूँ' में इस माह सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री प्रेम जनमेजय ने स्वयं को अभिव्यक्त किया। श्री दिनेश मिश्र के संयोजन में आयोजित इस गोष्ठी में अनेक वरिष्ठ रचनाकार उपस्थित थे।

'कवि-सन्धि' कार्यक्रम सम्पन्न

साहित्य अकादेमी द्वारा नयी दिल्ली में लब्धप्रतिष्ठ कवि लीलाधर मण्डलोई पर केन्द्रित 'कवि-सन्धि' कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें उन्होंने अपनी कविताओं का पाठ किया।

हिन्दी के संरक्षण में युवा पीढ़ी की सहभागिता आवश्यक

भारत की प्रमुख हिन्दीसेवी संस्था श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर द्वारा समिति भवन में स्वतन्त्रता सेनानी, पूर्व मन्त्री एवं हिन्दीसेवी पं० युगलकिशोर चतुर्वेदी की 19वीं पुण्यतिथि पर आयोजित 'हिन्दी संरक्षण दिवस' में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री गिरिराजप्रसाद तिवारी ने कहा कि हिन्दी हमारी मातृभाषा ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा भी है जिसका संरक्षण करने के लिए आगे आना चाहिए और ठोस कार्यक्रम बनाकर हिन्दी संरक्षण के लिए कार्य करने चाहिए।

'साहित्य और शक्ति का द्वन्द्व' परिसंवाद

प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'तद्भव' के 25वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर 'साहित्य और शक्ति का द्वन्द्व' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद, लखनऊ में सम्पन्न हुआ। 'तद्भव' सम्पादक व कथाकार अखिलेश ने इस आयोजन को कथाकार श्रीलाल शुक्ल की पावन स्मृति को समर्पित किया।

संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र में भाषण देते हुए प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह ने कहा कि साहित्य और शक्ति के बीच द्वन्द्वात्मक रिश्ता होता है। 'शक्ति' वही अर्थ व्यंजित नहीं करता, जो 'पॉवर' करता है। मिशेल फूको ने 'पॉवर' को समझने की बेहतरीन कोशिश की है। लेकिन यहाँ हम साहित्य और उसकी शक्ति पर विचार करें तो बेहतर होगा। इस सत्र में सर्वश्री नित्यानन्द तिवारी, वीरेन्द्र यादव, नीलाक्षी सिंह, राजू शर्मा ने विचार व्यक्त किये।

परिसंवाद के दूसरे दिन के प्रथम सत्र का विषय था : 'हिंसा, भय और सत्ता'। इस सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंह ने और संचालन दीपक कबीर ने किया।

परिसंवाद के अन्तिम सत्र 'शक्ति संरचना और साहित्य का प्रतिरोध' की अध्यक्षता वरिष्ठ रचनाकार मुद्राराक्षस ने और संचालन पत्रकार पंकज श्रीवास्तव ने किया। इन सत्रों में सर्वश्री विभूतिनारायण राय, अजय तिवारी, श्रीप्रकाश शुक्ल, जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपनी बातें रखीं।

अमृत महोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

7 जून को अलवर में प्रसिद्ध कवि श्री बलवीर सिंह 'करुण' के 75वें जन्मदिवस पर स्थानीय इन्द्रलोक होटल के सभागार में आयोजित अमृत महोत्सव समारोह की अध्यक्षता आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज ने की। डॉ० कर्णसिंह यादव मुख्य अतिथि तथा प्रसिद्ध विचारक डॉ० महेशचन्द्र शर्मा एवं डॉ० विश्रान्त वशिष्ठ विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर 350 पृष्ठों के अभिनन्दन ग्रन्थ 'करुण से मिलोगे या कि सिंह बलवीर से' के लोकार्पण के साथ ही 'ऐसे हैं कवि करुण' फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

कविता में पेंटिंग, पेंटिंग में कविता : एक अभूतपूर्व प्रस्तुति

पिछले दिनों इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर, दिल्ली में कला और कविता की एक अपूर्व कृति 'रंग आकाश में शब्द' पर एक कार्यक्रम का आयोजन पोयट्री सोसाइटी (इण्डिया) द्वारा किया गया जिसमें कविता और चित्र, शब्द और दृश्य-रूप में आमने-सामने थे। कविता में चित्र और चित्र में कविता की यह एक अनोखी कला यात्रा थी। कविताएँ थीं हिन्दी के वरिष्ठ कवि और नाटककार नरेन्द्र मोहन की और चित्र थे विख्यात चित्रकार शामा के। शब्द और चित्र की, कविता और पेंटिंग की यह एक अभूतपूर्व प्रस्तुति थी। संगोष्ठी में सर्वश्री केशव मलिक, एच०के० कौल, कवि नरेन्द्र मोहन, चित्रकार शमा ने अपने विचार व्यक्त किये और स्क्रीन पर चित्र प्रस्तुति के साथ काव्यपाठ भी किया।

गहराते भाषायी संकट पर नये चिन्तन की शुरुआत

हिन्दी भवन, भोपाल विगत16 और 17 जून को भारतीय भाषाओं के बीच सृजनात्मक सकारात्मक एकता, आदान-प्रदान तथा सार्थक संवाद की परिणाममूलक कार्ययोजना का मंच बना। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा सन् 1936 में स्थापित और तत्कालीन राष्ट्रनायकों द्वारा समर्थित-संचालित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अमृत पर्व ने इस आयोजन का सुअवसर जुटाया।

अमृतपर्व में विमर्श के लिए दो विषय रखे गये—एक, 'हिन्दी संस्थाओं के समक्ष चुनौतियाँ और नयी भूमिका' और दूसरा, 'हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच सार्थक संवाद की आवश्यकता'। संस्थागत विमर्श में वरिष्ठ हिन्दीसेवी सर्वश्री डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, डॉ० हरिसुमन विष्ट, नारायण कुमार, अनिल जोशी, नन्दकिशोर नौटियाल और डॉ० सुशीला गुप्ता तथा भाषिक संवाद पर केन्द्रित विमर्श में विभिन्न भारतीय भाषाओं के विद्वान् सर्वश्री प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रो० रमेशचन्द्र शाह (हिन्दी), डॉ० तंकमणि अम्मा (मलयालम), प्रो० मीनाक्षी जोशी (गुजराती), डॉ० इन्द्रनाथ चौधुरी (बांग्ला), प्रो० वाई० लक्ष्मी प्रसाद एवं प्रो० शेषात्लम् (तेलुगु), डॉ० ललिताम्बा (कन्नड़), डॉ० प्रतिभा गुर्जर (मराठी), अच्युतानन्द मिश्र, डॉ० यतीन्द्र तिवारी, प्रो० प्रमोद शर्मा, डॉ० केशव प्रथमवीर, डॉ० सत्यनारायण शर्मा, डॉ० श्रीराम परिहार आदि ने भाग लिया।

अमृतपर्व का शुभारम्भ 16 जून को म०प्र० के राज्यपाल श्री रामनरेश यादव ने किया।

हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा बना शमशेर का स्थायी घर

विश्वविद्यालय को मिला दुर्लभ पाण्डुलिपियों के अलावा शमशेर साहित्य का स्वत्वाधिकार

कवि केदारनाथ सिंह ने कहा है कि शमशेर बहादुर सिंह दोआब के विलक्षण कवि हैं। उनकी रचनाओं में हिन्दी और उर्दू की दोभाषिक संस्कृतियाँ मिलती हैं। शमशेर जितने हिन्दी के कवि थे, उतने ही उर्दू के। डॉ० केदारनाथ सिंह महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय में कालजयी कवि शमशेर बहादुर सिंह की 19वीं पुण्यतिथि पर आयोजित गरिमामय समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। इस समारोह में प्रसिद्ध लेखिका डॉ० रंजना अरगड़े ने शमशेर की प्रकाशित-अप्रकाशित रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ, चित्रकृतियाँ और उनके निजी उपयोग की सामग्री तथा शमशेर की रचनाओं की कॉपीराइट विश्वविद्यालय को सौंपी। डॉ० गंगाप्रसाद विमल, डॉ० निर्मला जैन आदि ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

रचना में जीवन-शैली अहम् : शेखर जोशी

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के इलाहाबाद क्षेत्रीय केन्द्र में गत दिनों 'मेरी शब्द यात्रा' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार शेखर जोशी ने अपनी रचना-प्रक्रिया को साझा करते हुए कहा कि जीवन-शैली से ही रचना प्रक्रिया का निर्माण होता है पर आज संकट इस बात का है कि हमारी जीवन-शैली में सामाजिक सरोकारों के लिए जगह नहीं बची है। समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध नाटककार अजीत पुष्कल ने की।

वर्धा में नागार्जुन सराय भी

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के साथ एक और महापुरुष का नाम जुड़ गया। फादर कॉमिल बुल्के छात्रावास के पास नवनिर्मित अतिथि गृह नागार्जुन सराय का उद्घाटन हिन्दी के विख्यात कवि केदारनाथ सिंह ने किया। इस अवसर पर कुलपति विभूतिनारायण राय,

प्रतिकुलपति प्रो० ए० अरविंदाक्षन, कुलसचिव डॉ० के०जी० खामरे आदि लोग उपस्थित थे।

संगोष्ठी

राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी एवं दर्शन एवं धर्म विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के तत्वावधान में 'भारत में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन : एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य (वैदिक से आधुनिक काल तक)' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी विगत दिनों सम्पन्न हुई।

उक्त त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में लगभग 35 शोध-पत्र पढ़े गये। समापन सत्र के मुख्य अतिथि रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली के पूर्व कुलपति प्रो० ओम प्रकाश ने सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन में अर्थ को ही मूल तत्त्व बताया। उन्होंने वैदिक से आधुनिक काल तक के लम्बे काल-खण्ड की ऐतिहासिक विवेचना करते हुए भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में जितने भी युद्ध एवं क्रान्तियाँ हुई हैं उन सबकी जड़ अर्थतन्त्र में ही निहित बताया। विशिष्ट अतिथि प्रो० ओम प्रकाश ने सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन में विज्ञान की अहम् भूमिका की विस्तृत चर्चा की। अध्यक्षीय उद्बोधन प्रो० महेन्द्र नाथ राय, कला संकाय प्रमुख, का०हि०वि०वि० ने किया।

विभाजन और मंटो ने मुझे प्रभावित किया

नयी दिल्ली स्थित साहित्य अकादेमी के प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'लेखक से भेंट' के अन्तर्गत वरिष्ठ कवि नाटककार नरेन्द्र मोहन से मुलाकात कराई गई। उन्होंने हाल ही में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'मंटो जिन्दा है' का अन्तिम अंश पढ़ा। यह पुस्तक मंटो की जीवनी है और इसका अन्तिम हिस्सा उनके जीवन के बिल्कुल अन्तिम क्षणों पर प्रकाश डालता है। श्रोताओं के अनुरोध पर उन्होंने 'पुतली नाच' कविता शृंखला की पाँच कविताएँ भी सुनाईं।

कार्यक्रम में त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, देवेन्द्रराज अंकुर, प्रयाग शुक्ल, अरविन्द गौड़, दयाप्रकाश सिन्हा, प्रेम जनमेजय आदि प्रमुख लेखकों, पत्रकारों, नाट्यकर्मियों ने सहभागिता की।

एब्सर्ड नाटकों के जनक हैं भुवनेश्वर

भुवनेश्वर द्वारा लिखित नाटक 'ताँबे का कीड़ा' (1946) भारतीय ही नहीं, अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में भी लिखा गया पहला 'एब्सर्ड (असंगत)' नाटक है। पश्चिम में भी इसकी शुरुआत द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद होती है। अत: भुवनेश्वर को 'एब्सर्ड (असंगत)' नाटकों का जनक कहा जाना चाहिए। उक्त विचार प्रसिद्ध कवि, आलोचक और नाट्य-चिन्तक नन्दकिशोर आचार्य ने साहित्य अकादेमी द्वारा भुवनेश्वर जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटन व्याख्यान देते हुए व्यक्त किए।

प्रभाकर श्रोत्रिय ने अपने बीज भाषण में कहा कि भुवनेश्वर का सम्पूर्ण साहित्य भावुकता को अस्वीकृत करता है। भुवनेश्वर रस की सत्ता को समाप्त कर 'आत्मताप' को प्रतिष्ठित करते हैं। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में अकादेमी के उपाध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भुवनेश्वर अपने जमाने से आगे के रचनाकार थे।

भुवनेश्वर की कहानियों पर आधारित सत्र की अध्यक्षता प्रो० गोपेश्वर सिंह ने की और मंजुला राना तथा सुषमा भटनागर ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। दिन के अन्तिम सत्र में भुवनेश्वर के नाट्य साहित्य पर देवेन्द्रराज अंकुर की अध्यक्षता में भानु भारती, ज्योतिष जोशी और राजकुमार शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किये।

संगोष्ठी एवं लोकार्पण

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के हिन्दी विभाग द्वारा राधाकृष्णन् सभागार में 'उत्तर छायावादी काव्य और गोपाल सिंह नेपाली' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में चर्चित नवगीतकार नचिकेता, वरिष्ठ समीक्षक रवि भूषण का०हि०वि०वि० के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० राधेश्याम दुबे, प्रो० महेन्द्र नाथ राय, प्रो० वशिष्ठ अनूप, प्रो० चम्पा सिंह आदि ने भाग लिया। प्रो० रवि भूषण ने गोपाल सिंह नेपाली पर एक लम्बा व्याख्यान दिया।

हिन्दी के चर्चित मार्क्सवादी आलोचक डॉ० लल्लन प्रसाद सिंह की आलोचना पुस्तक 'प्रगतिवादी आलोचना : विविध प्रसंग' का लोकार्पण विभागाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो० राधेश्याम दूबे द्वारा किया गया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रो० वशिष्ठ अनूप की पुस्तक 'जीत का आकाश' का भी लोकार्पण हुआ।

'प्रेरणा' पत्रिका का लोकार्पण

हरियाणा साहित्य अकादमी तथा अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के संयुक्त तत्वावधान में नयी दिल्ली स्थित अणुव्रत सभागार में आयोजित लघु उपन्यास विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर समकालीन आलोचना के शिखर पुरुष तथा महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ० नामवर सिंह ने भोपाल से अरुण तिवारी के सम्पादन में प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'प्रेरणा' के लघु उपन्यास अंक हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'हरिगंधा' तथा पूर्वोत्तर की लोक संस्कृति पर केन्द्रित डॉ० राजेन्द्र प्रसाद सिंह के सम्पादन में सिलीगुड़ी से छपने वाली मासिक पत्रिका 'आपका तिस्ता हिमालय' का लोकार्पण किया।

'राजधानी में एक उजबेक लड़की' का लोकार्पण

प्रगतिशील लेखक संघ के वार्षिक अधिवेशन में दिल्ली विश्वविद्यालय में मधेपुरा के युवा कवि अरविन्द श्रीवास्तव के कविता-संग्रह 'राजधानी में एक उजबेक लड़की' का लोकार्पण ताशकंद (उजबेकिस्तान) से आयी लेखिका डॉ० मोहय्या अब्दुरहमान के साथ विद्वान् आलोचक डॉ० असगर अली इंजीनियर, मराठी साहित्यकार सतीश कालसेकर तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य डॉ० चौथीराम यादव ने किया।

'जिजीविषा और अन्य कहानियाँ' का लोकार्पण

उदयपुर में राजस्थान साहित्य अकादमी एवं राजस्थान साहित्यकार परिषद्, कांकरोली के संयुक्त तत्वावधान में साहित्य अकादमी सभागार के अन्दर एक भव्य समारोह में सुप्रसिद्ध कवि, कथाकार, उपन्यासकार एवं साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' के सम्पादक कमर मेवाड़ी के सद्य: प्रकाशित कथा-संग्रह 'जिजीविषा और अन्य कहानियाँ' का लोकार्पण राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष वेद व्यास ने किया।

पण्डित शिवकुमार शर्मा और संतूर साधना

पिछले दिनों दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में 'संतूर : मेरा जीवन संगीत' पुस्तक का लोकार्पण वरिष्ठ विद्वान् राजनेता डॉ० कर्ण सिंह ने किया। अंग्रेजी में यह पुस्तक 'जर्नी विद ए हंड्रेड स्टिंग्स' नाम से पहले ही आ चुकी है जिसे पं० शिवकुमार शर्मा और इना पुरी ने लिखा है। इसका हिन्दी अनुवाद शैलेन्द्र शैल ने किया है।

'मुक्तिनामा'

पिछले दिनों दिल्ली स्थित इण्डिया इण्टरनेशनल के सभागार में विमल नैनी इस्सर के कविता-संग्रह 'मुक्तिनामा' का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि इस संग्रह में माँ और पिता पर ऐसे बिम्ब हैं जो अभी तक नहीं आए। मुख्य अतिथि कपिला वात्स्यायन ने कहा कि बाहर के दबावों को झेलते हुए भीतर के दबावों को अभिव्यक्त करना कठिन काम है।

भव्य लोकार्पण कार्यक्रम सम्पन्न

इन्दिरा गाँधी प्रतिष्ठान, गोमती नगर, लखनऊ में श्री जयशंकर मिश्र की कविताओं पर आधारित टाइम्स म्यूज़िक के द्वितीय एलबम 'रजनीगंधा' तथा काव्य-संग्रह 'बस यही स्वप्न, बस यही लगन' का लोकार्पण उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री अखिलेश यादव के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार श्री कुँअर बेचैन ने की।

'गीत-अष्टक' का भव्य लोकार्पण

भोपाल में राजपुष्प स्कूल के सभागार में आयोजित अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की मासिक काव्य-गोष्ठी के अन्तर्गत 'साहित्य सागर' के सम्पादक श्री कमलकान्त सक्सेना के सम्पादकत्व में प्रकाशित मध्य प्रदेश के आठ चुनिन्दा गीतकारों सर्वश्री यतीन्द्र 'राही', दामोदर

शर्मा, चन्द्रसेन विराट, जगदीश श्रीवास्तव, आचार्य भगवत दुबे, रामप्रकाश 'अनुरागी', निर्मल जोशी, मुकेश श्रीवास्तव 'अनुरागी' के श्रेष्ठगीतों के संकलन 'गीत अष्टक' का लोकार्पण किया गया।

'कुछ तो बाकी रह गया' कृति लोकार्पित

विगत दिनों दिल्ली में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में आयोजित समारोह में कुँवर विक्रमादित्य सिंह विरचित प्रथम काव्य कृति 'कुछ तो बाकी रह गया' का लोकार्पण दिल्ली के हिन्दी भवन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देश के प्रख्यात साहित्यकार व समालोचक डॉ० नामवर सिंह, वरिष्ठ कवि डॉ० गोपालदास नीरज व आकाशवाणी के निदेशक डॉ० लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने रचनाकार को शुभकामनाएँ दीं।

'दस्तकों के साये' का लोकार्पण

विगत दिनों दिल्ली के साहित्य अकादेमी सभागार में आयोजित समारोह में हिन्दी कवि-कथाकार डॉ० मधुकर गंगाधर की पुस्तक 'दस्तकों के साये' का लोकार्पण श्री त्रिपुरारी शरण ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री गंगाप्रसाद विमल, उद्भ्रान्त, संदीप मारवाह तथा भगवतीशरण मिश्र उपस्थित थे।

दो कृतियाँ लोकार्पित

विगत दिनों चैम्बर ऑफ कामर्स एवं इण्डस्ट्री, मेरठ के सभागार में साहित्यकार श्री शिवानन्द सिंह 'सहयोगी' की दो पुस्तकों 'घर-मुँड़ेर की सोनचिरैया' एवं 'दुमदार दोहे' का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ थे। अध्यक्षता श्री सुरेश उजाला ने की।

'लौलाक' कृति विमोचित

साहित्य अकादेमी के सभागार में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं पूर्व सांसद मौलाना ओबैदुल्लाह खाँ आजमी ने उर्दू के विख्यात शायर श्री चन्द्रभान खयाल की पुस्तक 'लौलाक' के हिन्दी संस्करण का विमोचन किया। अध्यक्षीय भाषण श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया।

पुस्तक दिवस पर लोकार्पण सम्पन्न

विगत दिनों अन्तर्राष्ट्रीय विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया एवं कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी विभाग, एस०एस०जे० परिसर, अल्मोड़ा के जन्तु विज्ञान विभाग के सभागार में 'वर्तमान दौर में पुस्तकों की प्रासंगिकता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अनेक पुस्तकों—'अज्ञेय की प्रतिनिधि कहानियाँ' सं० कृष्णदत्त पालीवाल, 'पर्वत-पर्वत, बस्ती-बस्ती' चण्डी प्रसाद भट्ट, 'गोपाल चतुर्वेदी : संकलित व्यंग्य', गोपाल चतुर्वेदी, 'उत्तराखण्ड की लोककथाएँ' हरिसुमन बिष्ट, 'हृदयेश : संकलित कहानियाँ' हृदयेश, 'ओड़िया की लोककथाएँ' सं० महेन्द्र कुमार मिश्र, 'जीवन परिवर्तन का बेमिसाल मंच कल्याणी' उषा भसीन, 'रवीन्द्र कालिया : संकलित कहानियाँ' रवीन्द्र कालिया आदि का लोकार्पण सर्वश्री एच०एस० धामी, देवसिंह पोखरिया, मनोहर पुरी, ललित किशोर मंडोरा, शेखर जोशी और एल०एस० सिंह ने किया।

पुस्तक की प्रथम प्रति राष्ट्रपति को भेंट

विगत दिनों मूर्धन्य साहित्यकार एवं राजनेता स्व० डॉ० शंकर दयाल सिंह के स्मृति ग्रन्थ 'राजनीति की धूप : साहित्य की छाँव' की प्रथम प्रति भारत की राष्ट्रपति महामहिम प्रतिभा देवीसिंह पाटिल को भेंट की गई। इसका सम्पादन सर्वश्री वेदप्रताप वैदिक, हीरालाल बाछोतिया व रंजन कुमार सिंह ने किया। राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में शंकर स्मृति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष, प्रसिद्ध चिन्तक एवं विचारक डॉ० कर्ण सिंह ने ग्रन्थ की प्रथम प्रति राष्ट्रपतिजी को समर्पित की।

'स्मरण-समारोह' एवं लोकार्पण

विगत दिनों कीर्तिशेष सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, मत्स्य राज्य के पूर्व उपप्रधानमन्त्री, लब्धप्रतिष्ठ लेखक एवं 'लोकशिक्षक' के संस्थापक-सम्पादक पं० युगलकिशोर चतुर्वेदी और उनकी सहधर्मिणी महीयसी प्रियंवदा को भावभीनी श्रद्धांजलियों के माध्यम से याद किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि राज्य के पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं राज्यसभा सांसद डॉ० ज्ञानप्रकाश पिलानिया थे।

इस अवसर पर पं० चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'मथुरा महिमा' (1934) पुस्तक का लोकार्पण मुख्य अतिथि एवं अन्य मंचस्थ विशिष्ट अतिथियों द्वारा किया गया।

लोकार्पण सम्पन्न

झाँसी की तीन साहित्यिक संस्थाओं लाजवन्ती, कवितायन, सरस्वती काव्यकला संगम के तत्वावधान में आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० रामनारायण शर्मा व मुख्य अतिथि श्री श्यामसुन्दर सेठ थे। कार्यक्रम में श्री नाथूराम शर्मा 'आर्येंदु' द्वारा रचित दो पुस्तकों 'सत्यमेव जयते' (मुण्डक सार) व 'काव्य पराग' (कविता-संग्रह) तथा श्री के०एम० श्रीवास्तव सखा द्वारा अनूदित पुस्तक 'अतीत की स्मृतियाँ' एवं 'काव्य कलश' के द्वितीय संयुक्तांक का विमोचन किया गया। इस अवसर पर कवि श्री नेमीचन्द जैन 'नेमि' और श्री एम०सी० कुल्हारे 'माणिक' का श्रीफल, अंगवस्त्र, प्रशस्त्रि-पत्र से सम्मान किया गया।

शिवनंदन सिंह के ग़ज़ल संग्रह का विमोचन

बेगूसराय में जनवादी लेखक संघ का एक साहित्यिक समारोह ग़ज़लगो शिवनन्दन सिंह की सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'प्यास लम्बी हो गयी' का विमोचन आयोजित किया गया और लोगों ने परिचर्चा की।

श्रीमती पद्मा सचदेव की पुस्तक लोकार्पित

राज्यसभा सांसद डॉ० कर्ण सिंह ने प्रसिद्ध हिन्दी लेखिका श्रीमती पद्मा सचदेव की ज्ञानपीठ प्रकाशन से प्रकाशित स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकरजी पर केन्द्रित संस्मरणात्मक पुस्तक 'ऐसा कहाँ से लाऊँ' का विमोचन किया।

लोकार्पण सम्पन्न

नयी दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर में 'राष्ट्रअमृत के पंचकलश' शीर्षक से डॉ० हरीन्द्र श्रीवास्तव की पाँच पुस्तकों के संशोधित एवं संवर्धित संस्करण का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर श्री बलराम मधु को 'वीर सावरकर पुरस्कार' दिया गया।

दो पुस्तकों का लोकार्पण सम्पन्न

विगत दिनों इलाहाबाद में प्रसिद्ध कहानीकार मार्कण्डेय की जन्मतिथि पर इलाहाबाद संग्रहालय के पं० ब्रजमोहन व्यास सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में मार्कण्डेय की कहानियों के नये संग्रह 'हलयोग' तथा कल्पना पत्रिका में 'चक्रधर' के नाम से साहित्यधारा स्तम्भ में लिखी टिप्पणियों के संकलन 'चक्रधर की साहित्यधारा' का विमोचन प्रख्यात कहानीकार श्री शेखर जोशी ने किया।

'बूँदों के बीच प्यास' का लोकार्पण

पिछले दिनों देवास के युवा कवि बहादुर पटेल के कविता-संग्रह 'बूँदों के बीच प्यास' का लोकार्पण इन्दौर के प्रीतमलाल दुआ सभागृह में बिजुका लोकमंच के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ गीतकार ओम प्रभाकर ने की एवं विशेष अतिथि थे वरिष्ठ कवि राजेश जोशी।

'सुधियों की सुगन्ध' काव्य-संग्रह का लोकार्पण प्रतिवेदन

सेवानिवृत्त भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन अधिकारी संघ, अहमदाबाद के तत्वावधान में सम्मानित अतिथि कवि श्री रामकिशोर मेहताजी द्वारा डॉ० मालती दुबे के काव्य-संग्रह 'सुधियों की सुगन्ध' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संघ के कार्यकारी अध्यक्ष श्री देवेन्द्र सिंह कुशवाहा द्वारा वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध कवि श्री रामकिशोर मेहताजी का शालार्पण सम्मान से किया गया।

'केदारनाथ अग्रवाल : कविता का लोक आलोक' पुस्तक लोकार्पित

केदारनाथ अग्रवाल जन्मशती वर्ष की समाप्ति पर उनकी कविताओं पर गत पचास वर्षों में लिखे गये श्रेष्ठ लेखों का चयन एवं सम्पादन 'केदारनाथ अग्रवाल : कविता का लोक आलोक' के रूप में सामने आया है, जिसका लोकार्पण साहित्य एवं संस्कृति की नगरी इलाहाबाद में हिन्दी के ख्यातनाम आलोचक नामवर सिंह, वरिष्ठ कथाकार दूधनाथ सिंह एवं विभूति नारायण राय, पुस्तक वार्ता के सम्पादक भारत भारद्वाज, कथाकार महेश कटारे एवं युवा कवि पवन करण द्वारा किया गया।

पुस्तक परिचय

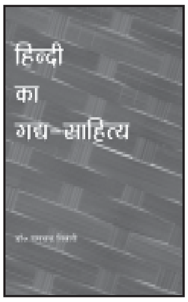

हिन्दी का गद्य-साहित्य

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

संशोधित तथा परिवर्द्धित
अष्टम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 968

सजि. : रु० 1000.00 ISBN : 978-81-7124-869-8
अजि. : रु० 600.00 ISBN : 978-81-7124-870-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'हिन्दी का गद्य-साहित्य' का सातवाँ संस्करण जनवरी सन् 2009 ई० में प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष बाद अब यह आठवाँ संस्करण प्रस्तुत है। तीन वर्षों में ही इसका नया संस्करण होना इस महत्त्वपूर्ण कृति की दिन-प्रतिदिन बढ़ती उपादेयता एवं लोकप्रियता का द्योतक है। इस बीच इस पुस्तक के लेखक डॉ० रामचन्द्र तिवारी का निधन (4 जनवरी 2009 ई० को) हो गया। प्रस्तुत संस्करण को यथासम्भव सभी दृष्टियों से समृद्ध बनाने का कार्य लेखक के चतुर्थ पुत्र डॉ० प्रेमव्रत तिवारी ने किया है। इस क्रम में पुस्तक के तीनों खण्डों में पर्याप्त परिष्कार और परिवर्तन करना पड़ा है, विशेषत: दूसरे खण्ड में विगत तीन वर्षों से गद्य साहित्य की विविध विधाओं में प्रकाशित होने वाली पूरी सामग्री का समावेश और सारगर्भित आकलन अत्यन्त श्रम साध्य कार्य था, डॉ० प्रेमव्रत तिवारी ने इसे पूर्ण निष्ठा से पूरा किया है। वे इसके लिए बधाई के पात्र हैं। शेष गद्यकारों के मूल्यांकन में यथास्थान नयी सामग्री जोड़ दी गयी हैं। प्रूफ सम्बन्धी गलतियाँ भी यथासम्भव ठीक कर दी गयी हैं। इस प्रकार 'हिन्दी का गद्य-साहित्य' अब हिन्दी गद्य की नवीनतम प्रवृत्तियों के विवेचन विश्लेषण से समृद्ध एक नितान्त उपयोगी सन्दर्भ ग्रन्थ बन गया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी संसार पहले की तरह इस महत्त्वपूर्ण कृति का स्वागत करेगा और निकट भविष्य में ही इसका नया संस्करण प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

"यह हिन्दी के गद्य-साहित्य का प्रामाणिक दस्तावेज है। समग्रता और सघनता दोनों दृष्टियों से यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। समग्रता का आलम यह है कि लेखक ने भारतेन्दु पूर्व से लेकर आज तक के हिन्दी गद्य के विकासमान स्वरूप की प्रामाणिक पहचान प्रस्तुत की है।" —**डॉ० रामदरश मिश्र**

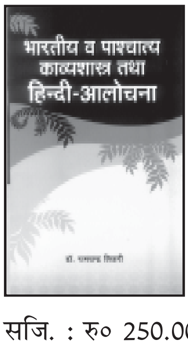

भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी-आलोचना

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 308

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-734-9
अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-735-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यह कृति विश्वविद्यालयों के उच्च कक्षा के छात्रों को दृष्टि में रखकर लिखी गई है। इसमें तीन खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में भारतीय काव्यशास्त्र की रूप-रेखा प्रस्तुत की गई है। दूसरे खण्ड में पाश्चात्य काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय दिया गया है। इस क्रम में उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को भी प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है जिसमें आलोचना की विशिष्ट प्रवृत्ति या आलोचक-विशेष के व्यक्तित्व का विकास हुआ है। तीसरे खण्ड में हिन्दी-आलोचना के विकास को संक्षेप में प्रस्तुत करने के बाद प्रमुख आलोचकों के आलोचक-व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। वस्तुत: हिन्दी-आलोचना का विकास भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के संश्लेष से हुआ है। संश्लेषण की प्रक्रिया भारतेन्दु-युग में ही आरम्भ हो गई थी, आगे चलकर यह हिन्दी-आलोचना की नियति बन गई। प्लेटो, अरस्तू, होरेस, लोंगिनुस, कोलरिज, जानसन, मैथ्यू आर्नल्ड, क्रोचे रिचर्ड्स, इलियट आदि की चर्चा किए बिना हिन्दी-आलोचना अधूरी समझी जाने लगी। प्रस्तुत कृति में काव्य-सिद्धान्तों और पारिभाषिक शब्दों को उनके मूल सन्दर्भ के साथ स्पष्ट करने की कोशिश की गई है।

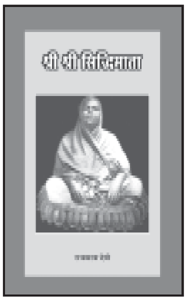

श्री श्री सिद्धिमाता

(कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित)

राजबाला देवी

संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 140

अजि. : रु० 90.00 ISBN : 978-81-89498-55-9

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

माँ जीवनकाल में अपने जीवन-चरित्र अथवा साधना के सम्बन्ध में ग्रन्थ प्रकाशित करने की पक्षपाती नहीं थीं। उन्होंने अत्यन्त एकान्त में सारा जीवन व्यतीत किया है तथा कोलाहलपूर्ण बाह्य जगत् में रहकर भी सदा ही अपने को भगवान् की ओर उन्मुख रखने का अभ्यास किया है। जगत् की स्तुति और निन्दा से दूर रहकर सदा निर्विकार चित्त से भगवान् की उपासना में तन्मय होकर रहना ही उनके जीवन का आदर्श था। किन्तु उनके तिरोधान के बाद भक्तगण स्वभावत: ही उनका जीवन-चरित्र सुनने और सुनाने के लिए उत्कण्ठित हो पड़े। कुछ समय पहले श्रीमती तरुबाला देवी ने माँ के सम्बन्ध में एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित की। वर्तमान ग्रन्थ की लेखिका श्रीमती राजबाला देवी ने अब यह दूसरी पुस्तक प्रकाशित की। इसमें माँ के पूर्व-जीवन की ऐसी अनेक घटनाएँ उल्लिखित हैं, जो श्रीमती तरुबाला देवी के ग्रन्थ में नहीं हैं—यहाँ तक कि माँ के अनेक भक्त भी यथार्थ रूप में उन्हें नहीं जानते। इन सब वर्णनों की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में किसी प्रकार के सन्देह का कारण नहीं है, क्योंकि इसका अधिकांश ही ग्रन्थलेखिका का स्वयं अनुभूत अथवा श्री माँ से साक्षात् प्राप्त है।

साधु-सन्तों की जीवनी का जितना अधिक अनुशीलन किया जाय, उतना ही मङ्गल होता है। श्री माँ जिस कारण अपने को प्रकाश में लाने में संकोच करती थीं उनके देह के तिरोभाव के अनन्तर अब वह कारण नहीं रहा। इसलिए इस समय इस ग्रन्थ के प्रकाश में कोई प्रतिबन्ध प्रतीत नहीं होता है।

ग्रन्थ रचयित्री ने हाथ जोड़कर माँ के निकट जो प्रार्थना की है, हम भी अपने अन्त:करण से उनसे वे ही प्रार्थनाएँ करते हैं—माँ समग्र जीव जगत् के नित्य कल्याण के लिए आप सबके ऊपर शुभ दृष्टिपात करें। अधिकांश जीव दु:ख-पङ्क में निमग्न होकर सुप्त चेतना की-सी अवस्था में पड़े हैं—चिदानन्द स्वरूपा मां उन्हें प्रबुद्ध कर—जगाकर—उनके अन्त:करण में ज्ञान और भक्ति का उन्मेष करें और उन्हें नित्य चैतन्य के प्रति आकृष्ट करें।

—**महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज**

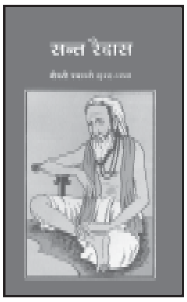

सन्त रैदास

श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 152

अजि. : रु० 70.00 ISBN : 978-81-7124-868-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सन्त रैदास, रूढ़ि, धार्मिक जटिलता और समाज को वितरित करने वाली व्यवस्था और विश्वास का साधु-प्रत्याख्यान करने वाले सन्त हैं।

मध्य-काल में उनका उद्भव आकस्मिक नहीं है। अपने समय से प्राय: एक हजार वर्ष से ज्यादा पहले से प्रचलित जागृति, तात्विकता, विवेक और सद्‌विचार के साथ ही विरोध, संघर्ष और संगठन की जीवन्त परम्परा के वे प्रतीक हैं, उनको ठीक-ठीक समझने के लिए गतिशील जीवन-मूल्यों की पहचान आवश्यक है।

सन्त रैदास बनारस में 'मंडुवाडीह' के मंडेसर तालाब के निकट धूसिया कुट बाढ़ला चमारों की बस्ती में पैदा हुए और वीर-विनायक और पीर (सूफी) विश्वासों के भीतर उनके संस्कार बने।

इस पुस्तक में अनेक विशेषताएँ हैं। सन्त रैदास का जीवनवृत्त है, निजंधर साहित्य में प्राप्त रैदास पर कुछ महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ हैं, उनकी रचनाओं से सम्बन्धित कई 'पंच बानी' संग्रहों का उल्लेख है, रचनाओं की प्रामाणिकता का विचार है, साहित्य का मूल्यांकन और उन हस्तलेखों का उल्लेख है जहाँ से 'शबनम' जी को रैदासजी की कविताएँ मिलीं। इस पुस्तक में कुछ महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट हैं जिनमें रैदास परिचयी और कबीर-रैदास गोष्ठी का पाठ भी दिया हुआ है। अनुसंधान कर्मियों और अध्येताओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

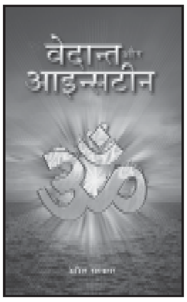

वेदान्त और आइन्सटीन

अनिल भटनागर

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 84

सजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-857-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भौतिक विज्ञान ऐसा विषय है जो मनुष्य को अमूर्त चिन्तन सिखाता है। पिछले 300 वर्षों से अधिक समय से बुद्धिजीवी वर्ग ने ब्रह्माण्ड की परम अमूर्त सत्ता का निर्धारण करने के लिए इस विषय को चुना है। गैलीलियो, न्यूटन, कोपरनिकस, आइन्सटीन, मैक्स प्लांक, नील बोर, श्रोयडिंगर और अन्य दृढ़निश्चयी विद्वानों के माध्यम से हुए इस विषय के 300 वर्षों के विकास के परिणामस्वरूप ब्रह्माण्ड की इस अमूर्त सत्ता के बारे में दो भिन्न-भिन्न सिद्धांत सामने आये हैं। एक सिद्धान्त अल्बर्ट आइन्सटीन के सापेक्षता के सामान्य सिद्धान्त से प्रभावित है और दूसरा मैक्स प्लांक के क्वांटम सिद्धान्त से, जिसका परिवर्धन नील बोर और श्रोयडिंगर ने किया। आइन्सटीन का सिद्धान्त बृहत् (Macro) समष्टि (ब्रह्माण्ड) का सिद्धान्त है और मैक्स प्लांक का सिद्धान्त सूक्ष्म (Micro) समष्टि (ब्रह्माण्ड) का सिद्धान्त है। आज के वैज्ञानिक समष्टि (ब्रह्माण्ड) का एकीकृत सिद्धान्त खोज पाने के उद्देश्य से इन दोनों सिद्धान्तों को एक करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

श्री अनिल भटनागर ने 'वेदान्त और आइन्सटीन' नामक अपनी पुस्तक में भौतिक विज्ञान के इस आयाम में वेदों के ज्ञानकाण्ड के अमूर्त चिन्तन का उपयोग किया है, जिसे सामान्य रूप से वेदान्त के नाम से जाना जाता है और जो उपनिषदों में प्रतिपादित है। सम्भवत: यह अपनी तरह का पहला प्रयास है जब भौतिक विज्ञान और वेदान्त के निष्कर्षों को एक-दूसरे के साथ रखा गया है, जिससे चौंकाने वाले परिणाम सामने आये हैं। कदाचित् श्री भटनागर ने उसे संभव बनाने का प्रयत्न किया है जिसे अभी तक उन दार्शनिकों ने असंभव कहा है जो तत्वमीमांसा (Metaphysics) को भौतिक विज्ञान से बिल्कुल अलग मानते हैं।

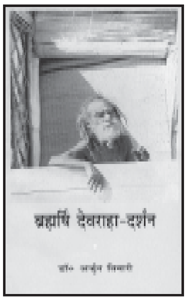

ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन

डॉ० अर्जुन तिवारी

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 132

अजि. : रु० 60.00 ISBN : 978-81-7124-846-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

जब आनन्द में अवसाद, शान्ति में अशान्ति, योग में भोग की प्रवृत्ति बढ़ती है तो युगद्रष्टा गुरु की खोज में सभी विकल रहते हैं। ब्रह्मर्षि देवराहा बाबा इस कलियुग में अप्रतिम गुरु थे जो भगवत्स्वरूप थे जिनके दर्शन, स्पर्श और शुभाशीष से तत्त्व ज्ञान की प्राप्ति सम्भव थी। उनके अन्त:करण से प्रस्फुटित वाणी में मानव पर मंत्रवत् प्रभाव डालने की क्षमता थी। वे भारतीय संस्कृति के विग्रह थे जो दया, ममता, कल्याण के स्रोत थे। पूज्य देवराहा बाबा का सर्वात्म दर्शन मानव में सद्भाव, प्रेम और विश्वशान्ति का उत्प्रेरक तत्त्व है जिसकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

ब्रह्मर्षि देवराहा बाबा के नाम की जितनी प्रसिद्धि है, उनके परिचय की उतनी ही अल्पता है। उनके दिव्य व्यक्तित्व को सांगोपांग रूप में प्रस्तुत करने में डॉ० अर्जुन तिवारी का प्रयास प्रशंसनीय है। बाबा के शिष्य डॉ० तिवारी ने पत्रकार-सुलभ प्रवृत्ति के चलते युग-प्रवर्तक संत, भक्त और योगी की जीवन-गाथा को प्रामाणिक रूप में उपस्थापित किया है। श्रद्धार्चन, जीवन-जाह्नवी, सर्वात्मभक्ति-योग, प्रवचन-पीयूष, सुबोध कथा, सूक्ति-मुक्ता और अनुगतों की अनुभूति नामक अध्यायों में ब्रह्मर्षि से संदर्भित अनुकरणीय तथ्य हैं। पुस्तक का प्रत्येक शब्द आध्यात्मिक अनुभूति से स्फूर्त है जिसके चिन्तन और मनन से मन को अलौकिक शान्ति मिलती है और चित्त निर्मल होता है।

देवत्व और मनुष्यत्व के सुभग समन्वय, 'असीम दया' के सम्बल, लोगमंगल के अवतार ब्रह्मर्षि देवराहा बाबा पर प्रस्तुत ग्रन्थ कल्याण-कामी जनों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

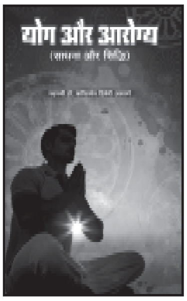

योग और आरोग्य
(साधना और सिद्धि)

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 320

सजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-834-6

अजि. : रु० 175.00 ISBN : 978-81-7124-872-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

योग भारतवर्ष की प्राचीनतम रहस्य-विद्या है। भारत ने ही विश्व को योग-विद्या का ज्ञान दिया है। इसका आधार कठोर साधना और तपस्या है। इससे ही प्रतिभा और ऋतम्भरा प्रज्ञा का विकास होता है। इस विद्या से ही अनन्त सिद्धियाँ और विभूतियाँ प्राप्त होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में इस विद्या की आद्योपान्त विधि बताई गई है, इसमें सम्पूर्ण योगविद्या का संक्षिप्त विवेचन है।

यह ग्रन्थ 10 अध्यायों में विभक्त है। अध्याय 1 में योग के आठ अंगों का संक्षिप्त विवरण है। साथ ही ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग और हठयोग की रूपरेखा दी गई है। अध्याय 2 में शरीर-संस्थान के वर्णन में मस्तिष्क, हृदय, श्वसन-संस्थान, स्नायु-संस्थान, पाचन-संस्थान, अन्त:स्रावी ग्रन्थियों एवं सात चक्रों का वर्णन है। अध्याय 3 में अतिलाभप्रद 25 आसनों एवं नेतिदौति आदि षट्कर्मों की पूरी विधि दी गई है। अध्याय 4 में प्राणायाम, उसके भेद, बन्ध और मुद्राओं का विस्तृत विवेचन है। अध्याय 5 में प्रत्याहार और धारणा की विविध विधियों का रोचक विवेचन है। अध्याय 6 में जैन, बौद्ध एवं श्री अरविन्द की ध्यानविधि का समन्वय करते हुए विविध ध्यान-पद्धतियों का विवेचन है। अध्याय 7 में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के कार्यों का वर्णन है। अध्याय 8 में कुण्डलिनी-जागरण और समाधि की विधियाँ दी गई हैं। अध्याय 9 में 155 दिव्य-ज्योतियों के दर्शन की विधि दी गई है। अध्याय 10 में 50 प्रमुख रोगों की चिकित्सा-विधि दी गई है।

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी वेदों के मूर्धन्य विद्वान् होने के साथ ही उच्चकोटि के

साधक थे। उन्होंने योग और आत्मसाक्षात्कार जैसे गूढ़ विषय को अति सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत कर जनहित का महान् कार्य किया है।

हिन्दू राज्य-तंत्र
(Hindu Polity)

प्रथम व द्वितीय खण्ड

काशी प्रसाद जायसवाल

अनुवादक : **रामचंद्र वर्म्मा**

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

प्रथम खण्ड : पृष्ठ – 224

अजि. : रु० 125.00 ISBN : 978-81-7124-881-0

द्वितीय खण्ड : पृष्ठ – 200

अजि. : रु० 125.00 ISBN : 978-81-7124-883-4

सम्पूर्ण (प्रथम व द्वितीय खण्ड) : पृष्ठ – 408

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-884-1

अजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-885-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

समितियों, चरणों और सभाओं के माध्यम से संचालित होने वाली वैदिक युगीन राज्य-तंत्र की व्यवस्था-यात्रा, आधुनिक भारत की संसदीय और पंचायती राज व्यवस्था तक आ पहुँची है। कहना अनुचित न होगा कि यह यात्रा भारतीय परिवेश के नवोन्मेष की यात्रा है। विश्लेषण की दृष्टि से देखें तो वैदिक युग के परवर्ती काल में लोगों की प्रवृत्ति अपने-अपने वर्ग का स्वतन्त्र शासन करने की हो चली थी। यह प्रवृत्ति वर्तमान लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था और आधुनिक राजनीति का विद्रूप भी है। वैसे तो विभिन्न कालखण्डों के इतिहासों को समेटे कितने ही कालजयी आख्यान हिन्दी पाठकों के बीच लोकप्रिय हुए, किन्तु स्व० काशीप्रसाद जायसवाल की 1924 ई० में प्रकाशित इस किताब को विशेष ख्याति मिली। मूल पुस्तक अंग्रेजी में लिखी गयी थी। यह मूल पुस्तक का अनूदित संस्करण है। पुस्तक में लेखक ने अत्यन्त सजीव व नये दृष्टिकोण से वैदिक इतिहास की सांगोपांग झाँकी पाठकों के लिए उपस्थित की है। साम्राज्यों के उत्थान-पतन की गाथाओं से बिल्कुल अलग यह हिन्दू राज्य-तंत्र की राजा रहित शासन प्रणालियों का विस्तृत आख्यान भी है। इस पुस्तक से इस जाति के संगठनात्मक या शासन प्रणाली सम्बन्धी इतिहास के एक बहुत बड़े अंश की पूर्ति होती है। इस पुस्तक को पढ़कर पता चलता है कि वैदिक ग्रन्थों में वर्णित प्रजातंत्रों का हमारा इतिहास कुछ अधिक प्रयोगधर्मी, कुछ अधिक परिपक्व और कुछ अधिक सफल था। हिन्दू राजनीतिशास्त्र सम्बन्धी साहित्य की रचना का आरम्भ 650 ईसा पूर्व में हो चुका था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र, कामंदकीय नीतिसार तथा मेगास्थनीज के आख्यानों से होते हुए प्रस्तुत पुस्तक की रचना तक की यह यात्रा-कथा हिमालय से लेकर हिन्द महासागर के बीच बसे इस विस्तृत भारतीय भूखण्ड के राज्य-तंत्रात्मक इतिहास की प्राचीन कथा है।

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण आने के बाद से दुनिया में बहुत-सी उथल-पुथल हुई है, छोटे-बड़े अनेक परिवर्तन हुए हैं और भारत भी इस बीच आजाद हो गया है। किन्तु इतिहास का अन्वेषण करने वाले इस आख्यान की महत्ता कम नहीं हुई है। वैसे तो वैदिक काल के इतिहास पर किसी का भी कुछ भी लिखना चुनौतीपूर्ण कार्य है पर आज की दुनिया और उसके कठिन सवालों को छोड़कर बीते समय की खंगाल और वैदिक इतिहास के पन्नों से आज के समाज को रूबरू कराना लेखक का विशिष्ट पुरुषार्थ भी है। पुराना इतिहास हमें सबक सिखाता है, हिदायतें देता है और आज के अन्धकार पर नयी रोशनी डालता है। कुछ सवाल दिमाग को मथते हैं, दिमाग में बहते ऐसे विचारों को पकड़ कर कागज पर उतारने से उसके नये-नये पहलू निकलते हैं। हमारे वेदों, पुराणों और उपनिषदों में वर्णित राज्यतंत्र की नीतियाँ, बदलते समय के साथ आधुनिक होते समाज ने त्याज्य मान लीं, अन्यथा खारवेल के शिलालेखों में राज्यारोहण को शासक होने के लिए शास्त्रसम्मत विधान नहीं माना गया है। विधिवत राज्याभिषिक्त राजा ही विधिमान्य शासक कहलाता था। इसीलिए विदेशी आक्रान्ताओं को 'नैव मूर्द्धाभिषिक्तास्ते' कहकर तिरस्कृत किया गया है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन के संस्थापक स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी की सद्-प्रवृत्तियाँ देश की साहित्यिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के काम में आजीवन सन्नद्ध रहीं। उन्होंने अपने जीवन-काल में ऐतिहासिक महत्त्व के विभिन्न दस्तावेजों, पुस्तकों और प्रामाणिक ग्रंथों का पुनः प्रकाशन किया।

प्रस्तुत पुस्तक भी उनकी योजना में शामिल थी। उनकी इच्छा थी कि इस विवेचनात्मक वैदिक इतिहास से हमारा आज का समाज और इतिहास के विद्यार्थी लाभ उठा सकें।

इस पुस्तक के सन्दर्भ हमारे आज के सवालों और वर्तमान व्यवस्था के परिदृश्य से सीधे जुड़ते हैं और नये रास्ते भी दिखाते हैं। यह अपनी धरोहर को यथासम्भव सँभालने और उसे नये प्रतिमानों, नये सन्दर्भों, नये सूत्रों तथा नये स्वरूप के साथ सम्बद्ध करने हेतु आने वाली पीढ़ी को सौंपने का काम है। इस प्रस्तुति के माध्यम से हमें नयी पीढ़ी को पुराने इतिहास से जोड़ने एवं मूर्धन्य मनीषी स्व० मोदीजी द्वारा शुरू किये गये मिशन को आगे बढ़ाने की दोहरी खुशी है। उनकी प्रेरणा और स्मृति को प्रणाम करते हुए अपनी नयी पौध के हाथ में उसका इतिहास सौंपने का हमें गहरा सन्तोष है। **—प्रकाशक**

स्तुति नति प्रणति

नथमल केड़िया

प्रथम संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 80

अजि. : रु० 80.00 ISBN : 978-81-7124-912-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

ऋषियों ने जिस मनोरमाभिराम विस्मयमयी प्रकृति का अवलोकन कर उसकी कारणभूत परमसत्ता के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट की थी—किस देवता का यजन करें (कस्मै देवा हविषा विधेम) और जिसने अपने इस निसर्गोद्यान में मानवातार से विविध लीलाएँ की साहित्य महोपाध्याय नथमलजी केडिया की कृति 'स्तुति नति प्रणति' उसी सत्ता के यजन के लिए है।

भगवान विष्णु के दो अवतार हुए—राम और कृष्ण। उनका जीवन और लीलाएँ हमको प्रेरणा प्रदान करनेवाली बल्कि हमारे जीवन में इतनी घुल मिल गयी हैं कि उनके सुख में हम सुखी व दुःखी होते हैं। राम के राज्याभिषेक के समाचार से आनन्दित व वनवास के समय शोक विह्वल होते हैं। कृष्ण जन्मोत्सव कितनी धूमधाम से मनाते हैं। मतलब उनकी प्रत्येक लीलाओं में मन से जुड़े होते हैं—अत्यन्त भक्ति भाव से उनका गान करते हैं। सन्त तुलसीदासजी ने भी कहा है—सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहे बिन रहा न कोई।

प्रस्तुत पुस्तक 'स्तुति नति प्रणति' उन्हीं प्रभु के गुणानुवाद का विनम्र प्रयास है। इसके विविध निबन्धों करुणा द्रव रामायण, राजस्थानी राम काव्य, नमामिमत्वं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् (इष्टदेव पवनसुत हनुमानजी के विराट् व्यक्तित्व पर), मंगलं परम्, मैं सखी वृन्दावन की, कृष्णं बन्दे जगद्गुरुम्, सखा सुनो श्याम के, कंचन थार कपूर की बाती सीता माँ, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का विराट स्तवन—भीष्म स्तवराज का आप जितनी बार पारायण करेंगे आपका आनन्द द्विगुणित होता जायेगा।

> सुना है, जब चिन्मय शिशु ने अपना छोटा-सा मुँह खोल दिया, तब एक ग्वालन ने उसके भीतर इस सम्पूर्ण विकट-मनोहर विश्व की झांकी देख ली; और वह क्षण भर हर्ष एवं आश्चर्य से मूक होकर खड़ी रह गयी। उसी प्रकार मेरी विवश जिज्ञासा खड़ी है। मेरी प्रार्थना यही है कि सामने दिखाई देने वाला सत्य कभी छिप न जाये।— **जी. शंकर कुरुप**

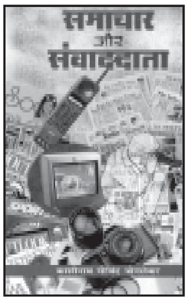

समाचार और संवाददाता

काशीनाथ गोविंद जोगलेकर

तृतीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 176

अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-908-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी में आमरुचि के विषयों, खासकर साहित्य और पत्रकारिता को लेकर, सहज, सुपाठ्य और व्यावहारिक जानकारियों से भरे लेखन का प्राय: अकाल रहा है। श्री जोगलेकर की यह प्रस्तुति इस शून्य को बखूबी भरती है। सीधे-सादे गद्य वाक्यों में सूक्ष्म, प्रामाणिक तथा सामयिक टिप्पणियाँ किस तरह दी जाएँ, और किन उसूलों, नियमों के तहत, पत्रकारिता के छात्रों के लिए इसकी जानकारी बेहद जरूरी और बुनियादी है। संवाददाता की खबरों की पूरी दुनिया में क्या स्थिति तथा महत्व है? संपादक, खासकर मालिक-संपादक के साथ कार्यकारी धरातल पर उसकी कैसी युति बैठती है, यहाँ से पुस्तक अनेक रोचक दृष्टांतों समेत अपने कथ्य को शुरू करती है। हाल के वर्षों में हमारे यहाँ पत्रकारिता के क्षेत्र का एक लगभग अकल्पनीय रूप से विस्तार हुआ है। पर इसके बावजूद भाषायी पत्रकारिता के क्षेत्र में संभावनाओं तथा क्षेत्रवार पाठकीय रुचि-अरुचि के सर्वेक्षणों का कोई सिलसिला नहीं बन पाया है। बहरहाल श्री जोगलेकर ने इन सब तथा पत्रकारिता जगत के षड्‌यंत्रों, गुटबंदियों को लेकर छायावादी विलाप करने की बजाए, स्तरीय और व्यावहारिक जानकारियों की ओर मुड़ना पसन्द किया है। वे हिन्दी पत्रकारिता के उन गिने-चुने व्याख्याकारों में से हैं, जो पत्रकारिता को जबरन कालातीत दर्शन या साहित्य से जोड़ने की जिद नहीं करते, और ठोस उदाहरणों समेत इस क्षेत्र में शाश्वत के बरक्स तात्कालिक तथा विराट् के बरक्स सूक्ष्म की महत्ता को एक सहज विश्वसनीयता से स्थापित करते हैं।

पुस्तक का उत्तरार्ध विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों तथा उनसे सम्बद्ध पत्रकारिता की पड़ताल करता है। इसमें विदेशों, रक्षामोर्चों, आतंकवादग्रस्त क्षेत्रों में संवाददाता की उपस्थिति तथा उनसे जुड़ी अपेक्षाओं की तो चर्चा है ही, खेल, वाणिज्य तथा अर्थजगत और विकास योजनाओं पर तथा रेडियो और टी०वी० पत्रकारिता की भी चर्चा उठाई गई है। यह सभी क्षेत्र जहाँ सूचना और जानकारी के क्षेत्र में अनगिनत आयाम अपने आप में समेटे हुए हैं, वहीं इन पर रिपोर्टिंग संवाददाता को भाषा की क्षमता और सीमाओं से भी बखूबी परिचित कराती है। पत्रकारिता की ही कृपा से आज इन सब विषयों की सूचना देने वाली लोचदार हिन्दी आज गाँव-कस्बों के लिए भी सहज बोधगम्य बन गई है। जटिल नए विचारों और बुनावटों की अभिव्यक्ति के लिए दूसरी भाषाओं तथा अनुभवक्षेत्रों से शब्द और मुहावरे कभी उधार लेना और कभी उनका आविष्कार करना भी संवाददाता के लिए धंधई व्यस्कता पाने की नई राहें खोलता है।

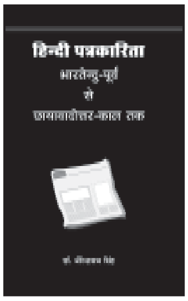

हिन्दी पत्रकारिता

(भारतेन्द-पूर्व से छायावादोत्तर-काल तक)

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह

द्वितीय संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 128

सजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-904-6
अजि. : रु० 60.00 ISBN : 978-81-7124-905-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस पुस्तक में भारतेन्दु-पूर्व से छायावादोत्तर काल तक की पत्रकारिता का प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। किसी भी विधा के इतिहास लेखन के लिए प्रवृत्तियों का अध्ययन, काल-निर्धारण, काल का नामकरण और समीक्षात्मक प्रस्तुति अपेक्षित है। इस मानक पर हिन्दी पत्रकारिता का यह प्रथम प्रामाणिक इतिहास है। हिन्दी पत्रकारिता के 121 वर्षों के इतिहास को छ: कालों में विभाजित किया गया है और युगविशेष की प्रवृत्तियों के अध्ययन के बाद ही इतिहास प्रस्तुत किया गया है। काल-विभाजन से प्रत्येक काल की प्रवृत्तियों और उस अवधि में प्रकाशित पत्रिकाओं के योगदान को सहज रूप में समझा जा सकता है। हिन्दी भाषा और साहित्य का जो स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से आरम्भ हुआ वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक पूर्णता को प्राप्त हुआ। इस दृष्टि से भारतेन्दु-पूर्व से छायावादोत्तर काल तक का साहित्यिक विकास उस युग की पत्र-पत्रिकाओं में ही देखा जा सकता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रथम चरण उन्नीसवीं शताब्दी है तो दूसरा चरण बीसवीं शताब्दी के प्रथम पचास वर्ष। यह पुस्तक पत्रकारों, सामान्य पाठकों तथा पत्रकारिता के छात्रों को पत्रकारिता की प्रामाणिक जानकारी कराती है। इस पुस्तक में पत्रिकाओं का प्रामाणिक परिचय, उनका सम्पूर्ण इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में पुराने समाचार पत्रों के मुख पृष्ठों के प्रकाशन से ग्रन्थ की उपयोगिता और भी बढ़ गयी है।

अखण्ड महायोग

महातंत्रयोगी महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज

चतुर्थ संस्करण : 2012 ई०

पृष्ठ : 88

अजि. : रु० 50.00 ISBN : 978-81-7124-858-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'अखण्ड महायोग' स्वनामधन्य महातंत्रयोगी महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ जी कविराज की महाकरुणा का अजस्त्र निर्झर है। यह है उनके मनुष्यत्व की सुगन्धित बयार। अथवा यही है उनकी प्रकृत् दार्शनिक वृत्ति का कारणानुसन्धान रूपी तत्त्वदर्शन। इससे ध्वनित होता है वह आप्तोपदेश—जो तत्त्वदर्शी की प्रोज्ज्वल प्रज्ञा में समुद्भासित होकर अखण्ड महायोग के रूप में जन-जन का गन्तव्य पथ अपनी आभा से आलोकित कर रहा है।

कविराज जी यथार्थत: क्रान्तदर्शी थे। क्रान्तदर्शी अर्थात् व्यापक दृष्टि सम्पन्न, अतीत एवं अनागत प्रत्यक्ष में समर्थ। कवि अर्थात् ''कविर्मनीषी परिभू: स्वयंम्भू''। जो देखते हैं, जानते हैं, वे ही कवि हैं। जो प्रकाश करने में समर्थ हैं वे कवि हैं। उनकी काव्यमयी वाणी, आज भी अमरधाम से अपना सन्देश प्रसारित कर रही है। वह सन्देश है 'अखण्ड महायोग'।

जिस अवतरण की चर्चा इस ग्रन्थ में की गई है, वह है यथार्थत: क्षण का अवतरण। सृष्टि में क्षणधारण सार्मथ्य नहीं होने के कारण आज तक क्षणावतरण नहीं हो सका। ज्ञानगंज की अप्रतिम साधना से सृष्टि में क्षणधारण की क्षमता आ चुकी है। तभी कहा गया है कि अवतरण का समय आसन्न है। सम्पूर्ण विषय अतिगूढ़ तथा गहन है। केवल वाक्यविन्यास से इसके यथार्थ स्वरूप का उद्घाटन नहीं हो सकता। इस हेतु अभिप्रेत है कर्म, जप तथा सेवा की त्रयी। अन्तर्जागरण की अनुभूति के आलोक में इस अखण्ड महायोग ग्रन्थ का मर्मीगण आयत्त कर सकेंगे।

साहित्यकार वहाब अशरफी का निधन

मशहूर साहित्यकार 76 वर्षीय वहाब अशरफी का विगत दिनों पटना में निधन हो गया। वर्ष 2010 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित श्री अशरफी को बिहार के सबसे बड़े साहित्य पुरस्कार मौलाना मजहरूल हक सम्मान भी दिया गया था। उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार भी मिला था। उन्होंने 45 पुस्तकें लिखी थीं। उनकी पुस्तक 'तारीख-ए-अदबियाते आलम' विश्वभर में मशहूर हुई। उनके निधन से साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

'फ़िराक' और 'फ़िराक' का चिन्तन : रेवती लाल शाह, सम्पादक : प्रमोद शाह 'नफ़ीस', प्रकाशक : शैली पब्लिकेशंस, प्रथम तल 14, चाँदनी चौक स्ट्रीट, कोलकाता-700072, संस्करण : प्रथम 2012, मूल्य : 200/- रु०

× × आलोचक की गम्भीर पैनी दृष्टि और भावनाओं के धरातल पर समानधर्मा संवेदना लेकर किसी कवि की कविता से गुजरना कतई आसान नहीं है। इस कठिन दायित्व को निभाने की योग्यता लेकर स्व० रेवतीलाल शाह ने मरहूम शायर रघुपति सहाय 'फ़िराक' गोरखपुरी की शायरी पर, उनकी शख्सियत और फ़लसफे पर नये सिरे से विचार किया है। लेखक की इस फ़िराकफहमी ने जहाँ कवि के काव्य का अर्थापन किया है, कविता में प्रयुक्त फारसी शब्दों के अर्थ-बोध की संवेदनाओं से साक्षात्कार किया है वहीं आधुनिक दौर में उर्दू भाषा के इस महान शायर को भारतीय-चिन्तन परम्परा का शायर सिद्ध किया है। फ़िराक की शायरी में भारतीय-दर्शन की ब्रह्माण्ड-व्यापी एकात्मता खुद-ब-खुद बयाँ होती है।

यारों बाहम गुँधे हुए हैं कायनात के बिखरे टुकड़े
एक फूल को जुम्बिश दोगे तो इक तारा काँप उठेगा।

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् : लेखक एवं प्रकाशक : आचार्य (डॉ०) रमेशचन्द्र यादव 'कृष्ण', कृष्ण कुटीर, कृष्णपुरी, लाइनपार, मुरादाबाद-244001, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 850/- रु०

× × आस्था, तपस्या, अध्ययन, चिन्तन और अध्यवसाय की एकत्र संरचना है—'कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।' मध्यकाल के भक्त-कवियों ने श्रीकृष्ण के बाल-स्वरूप में अपने आराध्य का दर्शन किया, उनकी बाल-लीला का उद्गान करते हुए ब्रह्मानन्द प्राप्त किया वहीं दूसरी ओर रीति कवियों ने किशोर कृष्ण की शृंगार लीलाओं में रमकर चिदानन्द की खोज की है। किन्तु श्रीकृष्ण के बाल-किशोर वयस् के आगे उनके दीर्घ जीवन के तेजोमय विराट् व्यक्तित्व की खोज करने का प्रयत्न इस ग्रन्थ-आलेख में पदे-पदे द्रष्टव्य है। लेखकीय लक्ष्य से इतर यदि इस संधान का एकेडेमिक प्रारूप होता तो यह ग्रन्थ कृष्ण-साहित्य-सन्दर्भ कोश भी बन सकता था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएँ : डॉ० बानो सरताज, प्रकाशक : मार्डर्न पब्लिशिंग हाउस, 1 भोला मार्केट, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 250/- रु०

× × विश्व के सभी देशों की सभ्यता के सामाजिक-जीवन में नारी की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इसी दृष्टि से अंग्रेजों की औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध लड़े गये भारतीय मुक्ति-संग्राम (1857-1947) में शामिल लगभग 122 प्रमुख महिलाओं का परिचय देते हुए उनके संघर्ष से साक्षात्कार कराती है विदुषी लेखिका की यह कृति।

अटक पचीसी : डॉ० किशोरीलाल गुप्त, प्रकाशक : अभिनव प्रकाशन, मोंठ, झाँसी-284303, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 25/- रु०

अतिरथी अंगेश कर्ण : नन्दलाल यादव 'सारस्वत', प्रकाशक : सारस्वत प्रकाशन, रजौन, बांका, संस्क० : प्रथम, मूल्य : 100/- रु०

× × अंगभूमि के अंगराज कर्ण को केन्द्र में रखकर लिखे गये दो प्रबन्धों का संग्रह है प्रस्तुत रचना। महाभारत के इस सुपरिचित कथावृत्त पर प्रत्येक भाषा में श्रेष्ठ साहित्य रचना हुई है। उसी कड़ी में सारस्वत-भावावेश का एक और प्रबन्ध।

अनटचेबल्स-थ्रू-दी-एजेज़ : डॉ० झिनकू यादव, प्रकाशक : राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान, 53, महामनापुरी कालोनी, करौंदी, वाराणसी-221005, संस्करण : 2012, मूल्य : 400/- रु०

परिवर्तन (कहानी-संग्रह) : शमशेर बहादुर सिंह, प्रकाशक : अभिनव प्रकाशन, मोंठ, झाँसी-284303, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 100/- रु०

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 13 जून-जुलाई-अगस्त 2012 अंक : 6-7-8

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : **sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)